जापान-चरित्र

और

रूस-जापान का युद्ध

इतिहास।



बाबू आर० ए० अग्रवाल,
चन्दिया (रीवां स्टेट) निवासी कृत।



"Japan is indeed the object lesson of national efficiency, and happy is the nation that learns it"

—Lord Rosebury



"बाल-हितैषी" यन्त्रालय,
१० सदानन्द बाजार, बनारस सिटी।

प्रथम संस्करण] [मूल्य ।।।) आना

PRINTED AND PUBLISHED
BY
CHANDRA KUMAR BHATTACHARYA
AT THE
BAL HITOISHI PRESS, BENARES CITY

※ सूची-पत्र ※

छपते समय मैंने प्रूफ आदि बिलकुल ही नहीं देखा है। इससे सम्भव है कि कहीं छपते समय अशुद्धि हो गई हो। सो मैं अपने उदार पाठकों से यह निवेदन करता हूं कि शुद्धाशुद्धिकी ओर ध्यान न दे वास्तविक विषयकी ओर दृष्टि दें। अशुद्धिया द्वितीय संस्करण में ठीक करदी जायेंगी॥

चन्दिया (रीवास्टेट)
३१ मई, १९१३

निवेदक
आर० ए० अग्रवाल।



जापान-चरित्र

भौगोलिक वृत्तान्त।

१—स्थल निर्देश।



सियाके पूर्वप्रान्त प्रशान्त महासागर के मध्य स्थल में कई एक छोटे बड़े द्वीपों को एकत्रित कर जापान साम्राज्य संगठित हुआ है। उन में निपन, कियासिव, सिकक, येशो और फारमोशा, यह पांच द्वीप सर्व प्रधान हैं, इसके सिवा किवराइल, लुचुवोनिन, आदि बहुत से छोटे २ द्वीप इसके अन्तर्गत हैं।

जापान समुद्र कोरिया प्रणाली के पश्चिम में स्थित जापान [illegible] एसियाटिक रूस और कोरिया उपद्वीप से



वर्तमान सम्राट् योशीहितो ।

२—राजधानी और प्रधान नगरी ॥

जापानी भाषा में नीपन शब्द का अर्थ सूर्य्योदयका होता है। इस द्वीप को चीना लोग, यहु व जिपनऊ नामनें से पुकारते थे। प्राचीन युगके भारतवर्षमें इस द्वीपका नाम सुदर्शन था।

जापान देश की राजधानी टोकिओ नीपन द्वीप में अवस्थित है। 'टो' शब्द में प्राच्य और 'किव' शब्द से राजधानी का अर्थ होता है। जापानी भाषा में टोकिओ के अर्थमें प्राच्य-राजधानी समझना चाहिये। यह भूतपूर्व्व हमारी राजधानी कलकत्ते से ३२०० मील उत्तर पूर्वमें विराजमान है। मनुष्य संख्या इस शहर की १८ लाख है। यह नगर एशिया महादेश की गौरव स्वरूप सर्व प्रधान उन्नतिमय और वाणिज्य प्रधान स्थान है। समुद्र की कई एक शाखायें टोकिओ के बीच में से होकर निकली है। उनके उभय पार्श्व नानाविध सुन्दर २ वृक्ष श्रेणियां विराजमान हैं। राजधानी में अनेक छोटे बड़े सुहावने पुल हैं। सर्व प्रधान पुलका नाम निपवल है। राजप्रासाद शहरके मध्य अवस्थित है, सम्राट के व्यवहार तथा राज काज के सुविधाके निमित्त नानास्थानों में अनेक एक से एक बढ़ कर महल बने हुए हैं। और महलोंके चारों ओर जापान के अनेक प्रधान २ व्यक्तियों की नानाप्रकार की इमारतें सुशोभित हैं।

इस देशके साधारण गृहादि अधिकतर काष्ठ निर्मित है। बीच शहर के राजभवन में जापान की पारलियामेन्ट

१२६ से १५० अक्षांस के बीच में यह साम्राज्य अवस्थित है। जापान राज्यका विस्तार प्राय. २,५०००० वर्ग मील है। यह इंगलेन्ड, वेलस, स्काटलेएड और आयरलेन्डसे दुगना एवम जर्मन साम्राज्य और फ्रांस के बराबर है। यहां की मनुष्य सख्या ४ करोड़ से अधिक है।

जापान राज्य दो भागों में विभक्त है। जापान और आधीन द्वीप पुंज। जापान शब्द कहने से नीपन; किवासिवं, सिकक, और कई एक छोटे २ द्वीपों का नाम आजाता है। इन में नीपन लम्बाई में ९०० और चौड़ाई में १०० मील है।

किवासिव, लम्बाई में २०० और चौड़ाई में ८० मील है। सिकक द्वीप १५० मील दीर्घ और ८० मील प्रशस्त है।

आधीन द्वीप पुंजों में येशो और फारमोसा सर्वापेक्षा वृहत है। येशो की लम्बाई ३०० मील और चौड़ाई १०० मील है। फारमोसा लम्बाई में २०० और चौड़ाई में ७० मीलके करीब है।

येशो द्वीप इस समय होकायदा नामसे पुकारा जाता है। फारमोसा चीन समुद्र मे है। गत चीन-जापान के युद्ध (१८६४ ई०) मे जापानी लोगों ने चीन से यह द्वीप प्राप्त कर अपने साम्राज्य में मिला लिया है।

आधीन द्वीप पुंजों में येशो और फारमोसा सर्वापेक्षा वृहत है। येशो की लम्बाई ३०० मील और चौड़ाई १०० मील है फारमोसा लम्बाई में २०० मील और चौड़ाई में ७० मील है।

२—राजधानी और प्रधान नगरी ॥

जापानी भाषा में नीपन शब्द का अर्थ सूर्य्योदयका होता है। इस द्वीप को चीना लोग,'यहू व जिपनऊ नामने से पुकारते थे। प्राचीन युगके भारतवर्षमें इस द्वीपका नाम सुदर्शन था।

जापान देश की राजधानी टोकिओ नीपन द्वीप में अवस्थित है। 'टो' शब्द में प्राच्य और 'किंच' शब्द से राजधानी का अर्थ होता है। जापानी भाषा में टोकिओ के अर्थमें प्राच्य-राजधानी समझना चाहिये। यह भूतपूर्व्व हमारी राजधानी कलकत्ते से ३२०० मील उत्तर पूर्वमें विराजमान है। मनुष्य संख्या इस शहर की १८ लाख है। यह नगर एशिया महादेश की गौरव स्वरूप सर्व प्रधान उन्नतिमय और वाणिज्य प्रधान स्थान है। समुद्र की कई एक शाखायें टोकिओ के बीच में से होकर निकली है। उनके उभय पार्श्व नानाविध सुन्दर २ वृक्ष श्रेणियां विराजमान हैं। राजधानी में अनेक छोटे बड़े सुहावने पुल हैं। सर्व प्रधान पुलका नाम निपवस है। राजप्रासाद शहरके मध्य अवस्थित है, सम्राट के व्यवहार तथा राज काज के सुविधाके निमित्त नानास्थानों में अनेक एक से एक बढ कर महल बने हुए हैं। और महलोंके चारों ओर जापान के अनेक प्रधान २ व्यक्तियों की नानाप्रकार की इमारतें सुशोभित हैं।

इस देशके साधारण गृहादि अधिकतर काष्ठ निर्मित हैं। बीच शहर के राजभवन में जापान की पारलियामेन्ट

(महासभा), इउनिवरसिटी, वैंक , नेवल-कालेज, टारपेडो कालेज आदि हैं। इस शहरमें बाजार, चौक, उपवन और डक आदि बने हैं। सन् १६०९ ई० में इस शहर की मनुष्य संख्या १८ लाख के करीब थी॥

ओशाका तृतीय प्रधान शहर है। यह नगर समुद्रतीर में अवस्थित अति सुरक्षित बन्दर है। यहां की मनुष्य संख्या १२ लाखके लगभग है। यहां पर युद्धोपयोगी अस्त्र शस्त्र गोला बारूद आदि प्रस्तुत होते हैं। अनेक लोग इस शहर को योरोप के ग्रलविच नगर से तुलना करते हैं। इस नगर के अधिवासियों में अनेक लोग धनाढ्य और विलास प्रिय हैं। जापानी लोग इस शहर को 'प्रमोद निकेतन' के नाम से प्रसिद्ध करते हैं।

कियातो—कियातोके विश्वविद्यालय जगत प्रसिद्ध है। यहाँ पर जापान धर्मोपदेशक निवास करते हैं। जापानी लोग इनको 'दैरी' कहते हैं। इस शहरमें जापान के प्राचीन समय के अनेक चिह्न पाये जाते हैं। कियातो कुछ दिन हुए समग्र जापान राज्यकी राजधानी थी।

इयाकोहामा—जापान देशकी सर्व प्रधान सामुद्रिक बन्दर हैं। यहां पर अंग्रेज फरासीसी आदि वैदेशिक लोगोंके वाणिज्य जहाज़ आदि आकर लङ्गर डाला करते हैं।

हीयोगो—वाणिज्य का प्रधान केन्द्रस्थल है।

सिमनसेकी—समुद्र तीरवर्ती सुरक्षित बन्दर है। इस

नगरमें चीन जापान का सन्धिपत्र स्वाक्षरित हुआ था।

मेजारू—यहा एक गवर्नमेण्ट डक है। इस नगर में जल युद्धोपयोगी अस्त्र शस्त्रादि निर्माण हुआ करते हैं।

नागासाकि—अति सुरक्षित बन्दर है। किवासिव द्वीपमें अवस्थित इस शहरके डक जगत् विख्यात है। यहां बहुत कोयला निकला करता है। अंग्रेज अमरिकादि युरोपके हरेक जाति के लोग यहा विराट वाणिज्य फैलाए हुवे हैं। इस शहरके अधिकतर गृहादि अति सुन्दर कई रङ्ग के पत्थरोंके बने हुए हैं, और बौद्धमतके मठादि भी बहुत से बने हुए हैं।

सेसावो—जापान समुद्रके जहाज का प्रधान आश्रयस्थल है। यहां कई एक गवर्नमेण्ट डक है। इस बन्दर में बड़े २ जहाज, लाइनार, टारपेडो वोटादि तैयार हुआ करते हैं।

हाकोडेत—सुगारू प्रणाली के उत्तर तीर स्थित अति सुरक्षित बन्दर है। यहां जहाज निर्माणोपयोगी कई एक उत्कृष्ट डकादि है।

मातरामै—येशी द्वीपके शासन कर्ता यहा निवास करते हैं। जापान सम्राट समय २ पर इस नगरमें निवास करनेके लिये आते हैं। शहर चहूं ओर से छोट २ पहाड़ों द्वारा परिवेष्टित है। देखने में यह नगर रमणीय और स्वास्थप्रद है।

मोरोयान—अति सुरक्षित सामुद्रिक बन्दर है; इसके सिवाय जापान में फुकुसमा, आदि बड़े २ नगर हैं।

तयाने—चीनके दक्षिण पूर्वके उपकूल में अवस्थित फार-

मोशा द्वीपका प्रधान नगर है। यहां पर जापान के राज प्रतिनिधि निवास करते हैं। पहिले चीनके घोर अपराधी यहां भेजे जातेथे। फारमोशामें और भी एक अति समृद्धिशाली नगर ताकाओ है। उपरि उक्त नगरोंके सिवा जापान साम्राज्यमें कोव, हिरोसिमा, फूरि, निगातो आदि कई एक उल्लेख योग्य नगर और भी हैं॥

३—जलवायु।

जापान देशका प्राय: समस्त भागही शीत मण्डलके अन्तर्गत है। उत्तरांशमें युरोपके समान अति तीव्र जाड़ा होता है। वहा दिसम्बर और जनवरी मास में तापमान यन्त्रका पारा २८०° डिगरी के नीचे गिरजाता है। दक्षिणांशमें वायुका ताप अति ग्रीष्म के समय ९८° होजाता है, किन्तु दिनमें दक्षिणकी ओर से और रात्रि में पूर्वकी और से समुद्र वायु प्रवाहित होने के कारण ग्रीष्म का ताप तेज नहीं होने पाता। इस देश की ऋतु अत्यन्त परिवर्त्तनशील होने पर भी जल वायु साधारणत: स्वास्थप्रद है। पुर्व वायुकी अपेक्षा दक्षिणकी वायु समाधिक सुखप्रद है। वर्षांतमें जापान देशमें अति वारि वर्षण हुआ करता है। ग्रीष्म में वायुभी अति प्रचण्ड चलती है। झटिका, वज्रपात, समुद्रप्लावन और भूमिकम्प सर्वदा ही इस देश में हुआ करते हैं॥

४—भूमि और आपन्य ।

जापान की भूमि साधारणतः उर्वरा है। देशमें सर्वत्रही कृषि कार्य्य अति उत्तमतासे हुआ करता है। जापानी लोगों के समान कृषि कुशल जाति पृथ्वी में और कहीं नहीं होगी। यहां लोग एक टुकड़ा जमीनको भी नहीं फालतू रहने देते हैं। सुविधा के अनुसार बड़े २ उच्च पहाड़ोंमें भी खेतियां हुआ करती हैं। सरकारी आज्ञा है कि यदि कोई जङ्गलों को काट कूट कर खेती करेगा तो उससे ५ साल तक कुछ भी भूमि का महसूल नहीं लिया जायेगा और यदि कोई आदमी अपने खेतको विना जोते, बोये एक सालभी पड़ा रहने देगा तो उस की जमीन छीनकर किसी दूसरे को देदी जायगी। हां, यदि उसके पास कृषि योग्य सामग्री न होतो सरकारसे सर्व प्रकारकी सहायता दी जावेगी॥

जापान देशमें धान, जौ, गेहूं, चाह, रुई, रेशम, पाट, तम्बाकू आदि प्रचुर परिमाणसे उत्पन्न होती है। धान की खेती ही यहां सबसे अधिक होती है। यहांपर एक प्रकारका अति उत्कृष्ट चावल होती है जिस को शीतल जलमें डुबोने ही से भात बन जाता है। तम्बाकू नागासाकि ओरसासमा प्रान्तकी अतिउत्कृष्ट और सुगन्धयुक्त होती है। जापानी लोग बड़ी विद्वत्तासे तम्बाकूकी खेती किया करते हैं। विदेशी जिसने कभी तम्बाकू का सेवन न किया होगा वह भी इस देशमें पहुंचने पर अवश्य लाचार हो इस तम्बाकूको पीयेगा और उसे इस तम्बाकू की

ममता त्यागनी कठिन हो जायगी ॥

और भी नाना प्रकारकी वस्तुएं जैसे तरबूज, आलु, काफी, चा, सन्तरा, अंगूर, अमरुद, आम, केला, वाश, कपूर और वार्निश उत्पादक वृक्षादि, नानाविध आश्चर्य उद्भिज यहांपर अधिकतासे उत्पन्न होत हैं।

एक प्रकारके वृक्षसे दूधके समान श्वेत वर्ण रस निकलता है जो दूधसे भी अधिक उपकारी और मीठा होता है। बड़े बड़े वृक्षों में ओक, पाइन, देवदार महाग्नि आदि अधिक होते हैं। जापान देशमें नाना श्रेणीके अति मनोहर सुगन्धयुक्त पुष्प खिलते हैं। इस देशमें पशमका अभाव नहीं है। यहाकी तूत से पैदा हुई रेशम जगत प्रसिद्ध है।

५—धातु ।

स्वर्ण, रौप्य, ताम्र, टीन, पत्थर का कोयला आदि अधिकता से खानों से निकाला जाता है। लोह अधिक नहीं निकलता है इससे यहां के निवासी अधिक कार्य ताम्बे से ही लिया करते हैं। यहां के ताम्बे के समान अति उत्कृष्ट ताम्बा पृथ्वी के किसी और भाग में नहीं मिलता है। जापानी लोग इस ताम्बे की एक इञ्च मोटे और वीस फुट चौड़े तख़्ते आदि बना कर संसार के नाना प्रान्तों में विक्रय करते हैं। दूसरे नम्बरके ताम्बा ईंट के आकारका बनाया जाता है ॥

जापानमें ताम्बेकी किसी किसी खानसे सोना निकलने लगता है ॥

सम्राटकी आज्ञा बिना कोई भी कम्पनी स्वर्ण मुद्राइका कार्य्य प्रराम्भ नहीं कर सकती ह। इस देशका टीन चादीके समान उज्वल होता है। जापान देशके नाना स्थानोंमें एक बिलकुल सफेद रगकी मिट्टी निकलती है जिसके वर्तन बनने पर पत्थरके समान मजबुत हो जाते है। हमारे देशमें जो एक से एक बढीया बने हुए चीनी के वर्तन आते हैं वह यहा से ही अधिक आते हैं तथा संसारके नाना प्रान्तों में जाकर बहु मूल्य में बिकते हैं ॥

६-जीव-जन्तु ।

जापानमें अश्व, महिष, गाय, बैलादि भी अधिक हैं। इस देश के अश्व अति बलीष्ठ किन्तु ठिंगने होते हैं। कृषि-कार्य्य और गाडी खींचने के लिये अधिकतर इन घोड़े और बैलोंसे काम लिया जाता है। मेष, हरिण, शूकर, रीछ बकरा आदि भी अधिक हैं ॥

जापान के पशु, पक्षी अति विचित्रही होते हैं। इस पार्थिव अमरावतीमें हस, मोर, और भरत पक्षीके सिवा उज्वलवर्ण विशिष्ट विहंग बहुत हे ॥

यहा सर्प बहुत कम है। फिलाकारी और तितानाजी नामक दो श्रेणी के सर्प यहा हैं। वह हमारे यहा के काले और चित्ते

वैदिक धर्मोपदेशक लोग इन देशोंमें आया करते थे इस बातका विस्तार सहित स्वीकार किया है॥

कुछही समय व्यतीत हुआ जब आर्य्य वणिक सम्प्रदाय जहाजोंमें सवार हो बालि, जावा, सुमात्रा, बोर्नियो, आदि प्राच्य द्वीप पुञ्जोंमें आवागमन करते थे। इन सब स्थानोंमें अबतक भी आर्यलोगोंके उपनिवेशके स्पष्ट चिह्न वर्त्तमान हैं। आर्य्य लोग जापानमें बराबर आते जाते थे इस बातका बहुतसा प्रमाण उक्त देशमें अबतक भी विद्यमान है। इयाकोहामासे कुछ दूर, कामिमुरा नामक स्थानमें १६।१७ हाथ ऊंची एक स्वच्छ प्रस्तर की बुद्धदेवकी प्रतिमूर्त्ति है। मूर्त्तिके नीचे संस्कृत श्लोकोंमें जो विवरण लिखा है उसके पढ़ने से मालुम होता है कि सन् ई० के बहुत पहिले बनी हुई यह प्रतिमा भारतवर्ष से यहां बड़ी धूम धामके साथ खरीद कर लाई गई थी॥

यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि जापानदेश का प्राचीन नाम सुदर्शन द्वीप था। वाल्मीकि रामायणके अन्तर्गत किष्किन्धा काण्डके चौबीसवें सर्गमें, चारुदर्शन सुदर्शन द्वीप और सूर्य्य राग रञ्जित मनोहर स्वर्ण पर्वतोंका उल्लेख है। कालक्रम से सुदर्शनका अर्थ 'निपन' होगया है। प्राचीन सुवर्ण पर्वतसे आधुनिक फुजिसान पर्वतका नाम उत्पन्न हुआ है। महर्षि वाल्मीकि जी ने सुदर्शन द्वीपको सूर्य्योदयका स्थान कहकर वर्णन किया है। हम ऊपर लिख आये हैं कि जापानी भाषामें नीपन शब्दका अर्थ सूर्य्योदय



का स्थान होता है। आर्य्यांके वैवस्वत मनुके समान जापान, राजवंशके आदि पुरुष शिन्तो (Shinto) सूर्य्यसे उत्पन्न हैं। जापान राजवंशके लोग अपनेको अबतक भी सूर्य्यवंशीय कह कर परिचय देते हैं॥

अनेक युरोपियन लोग अनुमान करते हैं कि सभ्यता अग्निसे प्रज्वलित हो जापान आज ऊषा के सुकुमार करुण प्रभाके समान जो उन्नतिके मार्गमें अग्रसर हो रहा है सो यह सब जापान वासियोंने युरोपसे प्राप्त की है। यह उनका अनुमान ठीक नहीं है। पाश्चात्य सभ्यतासे जापानने बहुत कुछ शिल्पचातुर्य्य प्राप्त किया है किन्तु उसके जातीय कलेवरका संगठन प्राचीन आर्य्यावर्त्त से ही सगठित हुआ है। अबतक भी उसका दृढ़ निदर्शन उसके उदाहरण इस देशवासियोंमें प्रत्यक्ष दृष्टिगत होते हैं।

जापान द्वीपकी उत्पत्ति और वहा के निवासियों के सम्बन्धमें अनेक उपाख्यान प्रचलित है। उनमें अधिकांशही भारतीय पोराणिक आख्यायिकोंके सामान अपूर्व रहस्यों से परिपूर्ण है। जापानी लोगोंको विश्वास है कि हमलोगोंसे कुछ पहिले इस द्वीपमें देवता राज करते थे। उन्ही देव वंशमें आतय और देव-धर्म-विशिष्ट एक सम्प्रदायके मनुष्योंका जन्म हुआ। कुछ दिन बाद उन लोगों की सन्तान सन्ततिसे हमलोगों की उत्पत्ति हुई है।

अँगरेज ग्रन्थकारोंका अनुमान है कि चीनसे जापानी

"कोजिकी" नामक जापानके पुराना ग्रन्थमें लिखा है कि 'जिन्तो' नामक एक महापुरुष भगवान सूर्यसे मृत्युलोक में उत्पन्न हुए। उनकी सन्तानसन्तति बहुत दिनों तक पृथ्वीपर शासन कर ,फिर स्वर्ग-लोकको चली गई। उनके चले जानेपर यहां 'निपन' राज्यमें देवासुर संग्राम आरम्भ हुआ।

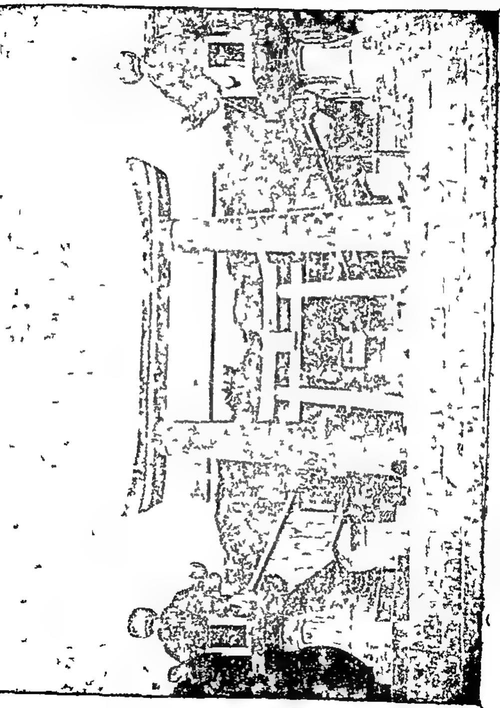
तब देवी वसुमती 'उकुनिननी' नामक अजेय असुर द्वारा महापीड़ित हो प्रभाकर-पत्नी महादेवी 'अमृतरासिको' का आश्रय ग्रहण किया। महादेवीने वसुन्धराके कातर क्रन्दन से दयार्द्र हो 'मिकाडो' नामक महाबलशाली देवसेनापतिको दैत्य दमनार्थ भूतलमें प्रेरित किया। बहुत दिनोंतक देव दानवका भीषण युद्ध होता रहा। अन्तमें मिकाडो और उनके मानस-पुत्रके बाहुबलसे दानव पराजित हो देश त्याग कर पाताल में भाग गये। युद्धके बन्द होनेपर मिकोडो निपनके सम्राट हुए।

उसी मिकाडो-वंशमें "जीमुतमनु" नामक एक महा प्रतिभाशाली नरपतिने जन्म ग्रहण किया। प्रथम'निनो'सम्वत् में अर्थात् ईस्वी सन्के ६६० वर्ष पहिले इनका आविर्भाव हुआ था। इस समयसे जापानमें काल-गणनाका सुत्रपात हुआ है। देव-वंश-सम्भूत कहकर प्रसिद्ध होनेके कारण जीमुतमनु देशमें महान प्रतिष्ठा प्राप्त किया था। सब धर्म मन्दिरोंमें महोत्सवके साथ आपकी नित्यपूजा

१२

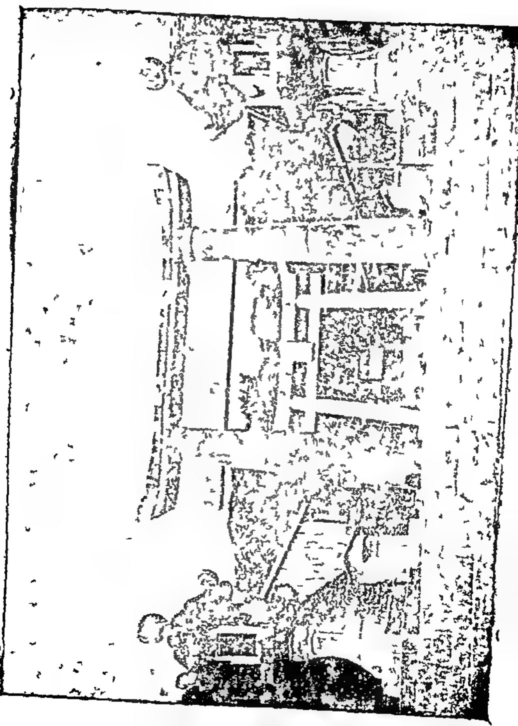
म्क
ग्रॉ
ला
आ
के

न
ाय
रि
नय
ाती
हो
ग्रौर
। ।



हुआ करती थी। प्रजागण आपको साक्षात-ईश्वर समझ आपसे भय और भक्ति करती थी। इन्हीं आज्ञाओं को जापानीलोग 'शिन्तो धर्म' कहते हैं। सूर्य्य-पूजा, राज भक्ति और स्वदेश प्रीति इस धर्मका मूल-मन्त्र है। प्रजा मात्र ही सम्राट और स्वदेशके निमित्त सागर सलिलके समान अकातर अर्थ और शोणित व्यय कर देती है।

जीमुतमनु मिकाडो के वादसे जापानका राज सम्मान अति अधिक परिमाण से वृद्धि पाता रहा। उस समय जन साधारण सम्राट को देवता समझकर उनका शरीर परम पवित्र जान पूजा करती थी। राजा उस समय मृत्तिका स्पर्श नहीं करते थे। किसी स्थानमें जाते समय वाहकों के कन्धे पर तामजाम में विराजमान हो परदेकी ओटमें हो आते जाते थे। सम्राट के नख और केश पाप-भयसे कोई काट छांट नहीं सकता था। सम्राटके लिये प्रतिदिन नूतन पात्रोंमें भोजन बनता, भोजनके बाद यह सब वर्तन सम्भ्रम फेंक दिये जाते थे। किसीको छुने तक को यह नहीं दिये जाते थे। जिसदिन सम्राट नूतन स्वर्ण पात्रोंमें भोजन करते वे सब सोनेके वर्त्तन गलाकर धातुके टुकड़े बना लिये जाते। सम्राट की तबियत भी कुछ अलील होने पर शिन्तो धर्ममन्दिर के पुरोहितलोग उपवासी रह त्रिकाल सन्ध्या और परमात्मा से प्रार्थना किया करते थे। सम्राट बारह सुन्दरी स्त्रियों तक को-



हुआ करती थी। प्रजागण आपको साक्षात-ईश्वर समझ आपसे भय और भक्ति करती थी। इन्हींकी आज्ञाओं को जापानीलोग 'शिन्तो-धर्म' कहते हैं। सूर्य-पूजा, राज भक्ति और स्वदेश प्रीति इस धर्मका मूल मन्त्र है। प्रजा मात्र ही सम्राट और स्वदेशके निमित्त सागर-सलिलके समान अकातर अर्थ और शोणित व्यय कर देती है।

जीमुतमनु मिकाडो के वादसे जापानका राज सम्मान अति अधिक परिमाण से वृद्धि पाता रहा। उस समय जन-साधारण सम्राट को देवता समझकर उनका शरीर परम पवित्र जान पूजा करती थी। राजा उस समय मृत्तिका स्पर्श नहीं करते थे। किसी स्थानमें जाते समय वाहकों के कन्धे पर तामजाम में विराजमान हो परदेकी ओटमें हो आते जाते थे। सम्राट के नख और केश पाप भयसे कोई काट छाट नहीं सकता था। सम्राटके लिये प्रतिदिन नूतन पात्रोंमें भोजन बनता, भोजनके बाद वह सब वर्तन तत्क्षण फेंक दिये जाते थे;किसीको छूने तक भी वह नहीं दिये जाते थे। जिसदिन सम्राट नूतन स्वर्ण पात्रोंमें भोजन करते वे सब सोनेके वर्तन गलाकर धातुके टुकड़े बना लिये जाते। सम्राट की तवियत भी कुछ खराब होने पर शिन्तो धर्ममन्दिर के पुरोहितलोग उपवासी रह, त्रिकाल सन्ध्या और परमात्मा से प्रार्थना किया करते थे। सम्राट बारह सुन्दरी स्त्रियों तक को

अपने भोग विलासके लिये रख सकते थे। पत्नीगभजात सन्तान मात्रही राज-सम्मान प्राप्त किया करती थी। परन्तु सबसे बड़ा पुत्रकाही गौरव अधिक होनेके कारण वही राज-सिंहासन पर बैठाया जाता था। सम्राट्की मृत्यु होनेपर कनिष्ठ पत्नी स्वामी के संग सती की जाती थी। अन्यान्य राज—महिषी अपनी इच्छानुसार सती धर्म्म पालन करती या पुनः अपना विवाह कर लिया करती थी।

हमारे पुराण ग्रन्थों की तरह जापानी पुराण ग्रन्थों में भी असम्भव बातें भरी हुई हैं। उनमें लिखा है कि पृथ्वी के नीचे एक बृहदाकार तिमि मछली है, उसीके मस्तक पर यह संसार टंगा हुवा है, उसीके जरा इधर उधर हिलने डोलने पर भुमि कम्प आदि महान उपद्रव हुआ करते हैं। पहिले जापानीलोगोंका यह विश्वास था कि देशके सब देव मन्दिर शिन्तोकी पताकों के ऊपर स्थापित है, उससे उन मन्दिरों में भुमि-कम्प आदिका कुछ असर नहीं होसकता है, मनुष्य कुदिनमें मरने पर प्रेतयोनिको प्राप्त होता है, तथा अधार्म्मिक लोग मरने पर श्रृगाल, कुकुर, शुकर और कौवे हुआ करते हैं।

हम जिस समयकी बात लिख रहे हैं उस समय भारत, चीन, ग्रीस और मिसर देशके सिवा सारे संसारके मनुष्य इसी प्रकार-अज्ञानान्धकार में निमग्न थे।

ईसवी सनके २४५० वर्ष पहिले से अबतकका जापानी इतिहास लिखा हुआ मिलता है। उसके पढने से मालूम होता है कि प्राचीन युग में भी जापानवासियों की शिल्प-कला और वाणिज्य-प्रियता बढी हुई थी।

सन् ईसवी के ६५० वर्ष पहिले जापानी लोग स्वदेश-जात द्रव्यादिको लेकर चीन और कोरिया के साथ समुद्रपथमें वाणिज्य व्यवसाय किया करते थे। वर्त्तमान् समय से दो सहस्र वर्ष पहिले भी उस देशमें प्रति १० वर्षमें देशकी मनुष्य संख्या गिनी जाती थी। १७०५ वर्ष व्यतीत हुए जब जापान में डाकघर स्थापित हो चुके थे। एक हजार वर्ष हुआ जब जापानी लोग रेशम तैयार कर उसके कपड़े चीनी तथा मिट्टि के बढ़िया बासन बनाना जानते थे।

ईसा जन्म के बहुत पहिलेसे ही जापानी लोग आर्य्यवर्त्त देशकी बात जानते थे। उसी समय यह लोग भारतवर्षको 'तेनजिकू' और भारतवासीको 'तेनजिकू-जिन' नामसे अभिवादन करते थे। उक्त दोनों शब्दों का अर्थ यथाक्रम स्वर्ग और स्वर्गवासी है। प्राचीनयुगमें जापानी-लोग किसी भारतवासी को दूर से देखने पर आपसमें कहते थे, 'आज मेरा मानवजन्म सफल हुआ, और स्वर्ग-यात्रा का पथ खुल गया, क्योंकि मैंने साक्षात स्वर्गवासी देवताके दर्शन कर

सौ वर्ष बाद कालक्रमसे 'माइनामतो' वंशका फिर अभ्युदय हुवा। उसमें 'येरितोमो' नामक एक महावीर प्रतापी पुरुषकी उत्पत्ति हुई। इतिहासोंमें लिखा है कि उनके समान असामान्य धीशक्तिसम्पन्न राजनीतिज्ञ व्यक्ति जापानमें इसके पहिले और एक भी जन्म ग्रहण नहीं किया था। वह सन ११८० में सम्राट 'तोबा कुरा' के साथ मित्रताकर अपने बुद्धि-कौशलसे प्रधान मन्त्रीका पद प्राप्त कर सब राज-कार्य स्वयंही चलाने लगे, याकि यों कहिये कि अबसे आपने जापानके सर्व्वप्रधान शासक बन अस्त हुवे अपने वंशको फिर उदय किया। किसी किसी इतिहास वेत्ताने लिखा है कि 'योरितोमा' जापान-साम्राज्यके 'ताईकुन' अर्थात् सेना-पतिके प्रधान पदमें विराजमान थे।

इसी समय जापान की जागीरदारी की प्रथाका परि-वर्त्तन हुवा। अब आगे से जागीरदार लोग अपनी सब भूमि सम्राटको अर्पण कर बड़े २ जमींदार लोग अपने वेतन स्वरूप दस हजार मन 'कोकू' अर्थात् धान वार्षिक पाने लगे। जागीरदारों को जापानी भाषा में 'दाई-मिओ' कहते हैं।

सन् ११८६ ई० में जापानके 'सोगन' अर्थात् राज-रक्षक नामका एक प्रधान पद निर्म्माण किया गया। उन्हीं 'नाईनामतो' प्रथम सोगन वंशके बुद्धिमान मन्त्री

के परिवार में सन ११८६ ई० से १३३६ ई० तक राज-शासन रहा। 'काकामुरा' नामक नगरमें उक्त मन्त्री महोदय के निवास करनेके भवन आदिके भग्नावशेष अवतक भी वर्त्तमान है। 'आसिकागो' नामक द्वितीय सोगन वंशने २३७ वर्ष तक 'कियातो' नगरमें निवास कर राज्य शासन किया था। इस वंशमें 'हिडोइयोसी' नामक एक प्रसिद्ध व्यक्तिने सोगन उपाधि धारण कर दो बार कोरिया देशका अधिकांश अपने अधिकारमें कर लिया था।

त्रयोदश शताब्दी में प्रसिद्ध विजयी 'जंगीस खॉ' के पुत्र सुप्रसिद्ध कुवलाई खां ने असंख्य मुगल सेना के साथ टीड़ी दलके समान जापान देशको घेर लिया। प्राय पांच वर्ष तक युद्ध होता रहा। अन्तके भीषण युद्ध में तीन लाख सेना को निनष्ट करवा अपने कई एक साथियों के साथ वह यवन वीर जापानियों से सम्पूर्ण पराजित हो स्वदेश भाग गया। इस दीर्घकाल व्यापी महासमर में जापान-निवासियों ने जो अद्भुत वीरत्व और अपूर्व स्वदेश-भक्ति का नमूना दिखलाया था उसका वर्णन जापानी इतिहास ग्रन्थों में पढ़ने से शरीर रोमाञ्चित और प्रेम-पुलकित हो जाता है।

बुद्धिमान कुवलाई खाँ पराजित हो स्वदेश को लौट कर शत्रु जापानियों का स्वदेश प्रेम तथा बौद्ध-धर्मकी गम्भीरता अनुभव कर इतना प्रसन्न हुवा कि चीन

और जापानने सादर बहुतसे लामाओं को अपने देश में बुला और उनके धर्म्मोपदेश सुन पहले आप बौद्ध धर्मावलम्बी हुवा, फिर अपने राज्यमें बौद्ध-धर्म्म प्रचार की आज्ञा दी।

सन १३०७ ई० में "तोकागुया" वंशके एक प्रसिद्ध व्यक्तिने सोगन उपाधि धारण कर जापानके राज सिंहासन अधिकार करनेका विचार किया। दीर्घकाल व्यापी भीषण गृह-युद्धके पश्चात मिकाडो वंशने 'कियातो' 'मियाको' और सोगन वंशके 'जेडो' (टोकियो) शहर को अपने अधिकारमें कर लिया। इस दारुण गृह-विवाद के विषमय फलके बीजसे जापानकी राजनैतिक तथा सामाजिक सब उन्नतियाँ बहुत दिनोंके लिये रुक गईंथी।

इस समयकी अवस्थाका वर्णन करते समय युरोपियन और अमेरिकन इतिहास वेत्ताओंने लिखा है कि जापान में दो नृपति राज करते थे। टोकियो का राजा राज्य शासन करता था, और कियातो का बौद्ध-धर्म्म का प्रचार कर रहा था। सुप्रसिद्ध जापानी ऐतिहासिक 'ओकाकुरा' ने इस विषयमें अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'Awaken-ing of Japan' में लिखा है कि इस देश की अवस्था के साथ वर्त्तमान भारतवर्ष और चीन साम्राज्य की तुलना की जा सकती है।

जापानी लोग वैदेशिक जातियों को, विशेष कर युरोपिय कृस्तान-सम्प्रदायी लोगों को, बहुत दिनों से विद्वेष और अविश्वासकी दृष्टिसे देख रहे थे। सप्तदश शताब्दीके आरम्भमें अंग्रेज, फ्रान्ससी, पोर्त्तगीज, डेनमार्क आदि युरोपिय जाति गण वाणिज्य के लिये जापानमें आगमन कर कौशल से अपने पैर अड़ादिये, किन्तु चतुर जापानियों ने अपना भविष्य विचार उससे सावधान हो कृस्तानोंको अपने देश से निकाल बाहर कर दिया था।

हमने इसके पहिले जिस गृह-युद्ध की बात का उल्लेख किया है, उसके विषमय फल से क्रमश जापानकी अवस्था शोचनीय होना आरम्भ हुई। इसी समय (सन १८५३ ई० में) कमोडोके पेरी नामक एक अमेरिकन जहाजी सेनापति अनेक युद्ध जहाज लेकर जापान समुद्र में पहुचा। जापान राज्य और अमेरिका साधारण-तन्त्रोंके बीच में एक वाणिज्य-सन्धि स्थापित करना ही उसका उद्देश्य था। उस समय 'तोकागुया' वंशके द्वादश सोगन जापान में राज्य कर रहे थे। वह उस जहाजी सरदारके प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

इससे सेनापति पेरी क्रोधित हो जहाजी तोपों से समुद्र किनारे के शहर टोकियो आदि में गोला बरसाने

यह स्थिर करतेही सबसे पहिले जापानके अद्वितीय शक्तिधर प्रधान सेनापति "किकि" स्वदेश-हित मनमें आत्म स्वार्थ विसर्जन किया। वह अपनी विशाल राज्य, सोगनका स्वर्ण सिंहासन, अतुल सम्मान आदि समस्तही सम्राटके चरणों में सौंप, आप केवल मात्र एक तलवार हाथमें ले अल्प वेतनमें ही नोकरी करना स्वीकार कर लिया। फिर 'दाइमिओ' उपाधिधारी बड़े २ जागीरदार लोग, 'आइच' और 'तोकामुया' वंशके सामुराईलोग और अन्यान्य सम्मानित वंशके राजा रईसों ने एक एक करके 'किकि' सोगन के दृष्टान्त का अनुसरण किया।

बड़े बड़े लखपति रईसोंने हंसते हुये स्वेच्छा से साधारण गृहस्थ बन अपनी २ सब अतुल धन सम्पति राज्यके कोषमें जमा कर दिये। इस आदर्शका दृष्टान्त मान, निरक्षर एक फौजी सिपाही तकने अपनी सब भूमि सम्राट को सौंप, स्वदेश-गौरव रक्षार्थ सम्राट के सन्मुख खड़ा हुवा।

समस्त देशमें ही स्वदेशानुरागकी प्रबल वायु बहने लगी। प्रति नगर, प्रति ग्राम में, स्वदेश और सम्राट की मङ्गल कामनाके लिये भगवान शाक्य मुनिकी आराधना होने लगी। बालक से वृद्ध पर्यन्त, कृषक से जमींदार

तक, मूर्खसे पण्डित तक—सबही लोग सम्राट और स्वदेशके निमित्त जीवन उत्सर्ग करनेके लिये प्रस्तुत हुये।

स्वदेशानुराग और जाति-प्रेमकी प्रबल वह्नि से जापान भूमि परम पुण्यमय होगई। सोगन पद विलुप्त हो जापान साम्राज्य एक मात्र सम्राटके आधीन हुवा। इस प्रकार सन १८६७ ई० में प्रशान्त महासागर के सुनील वक्षस्थल में एशिया के मुखोज्वलकारी जापान देशमें नवयुग आरम्भ हुवा।

२—नवयुग

सोगन आधिपत्य अवसान के बाद अगले वर्ष सन् १८६८ ई० में प्राचीन जापान को नव-जीवन प्राप्त हुवा। इसी वर्ष 'मेइजी सम्वत्' का इस देश में प्रचार किया गया। बड़ी धूमधाम के साथ सब देशमें एक प्रधान अधिपति होनेका ढिंढोरा पीटा गया। सम्राट ने शपथ ले स्वदेश-गौरव-रक्षार्थ प्रतिज्ञा की।

प्रथम मेइजी सम्वत में मिकाडो मेघमुक्त प्रभाकरके समान राज-सिंहासनमें सुशोभित हो एक घोषणा प्रचार किया। उस घोषणा-पत्र में निम्न-लिखित पाच विषय लिखे गये थे—

(१) राज्यके यावतीय कार्य देशके विद्वान हितैषीयों द्वारा परिचालित होंगे।



जापान के स्वर्गीय सम्राट् मुत्सुहितो।

तक, मूर्खसे पण्डित तक—सबही लोग सम्राट और स्वदेशके निमित्त जीवन उत्सर्ग करनेके लिये प्रस्तुत हुये।

स्वदेशानुराग और जाति-प्रेमकी प्रबल वह्नि से जापान भूमि परम पुण्यमय होगई। सोगन पद विलुप्त हो जापान-साम्राज्य एक मात्र सम्राटके आधीन हुआ। इस प्रकार सन १८६७ ई० में प्रशान्त महासागर के सुनील वक्षस्थल में एशिया के मुखोज्ज्वलकारी जापान देशमें नवयुग आरम्भ हुआ।

२—नवयुग

सोगन आधिपत्य अवसान के बाद अगले वर्ष सन् १८६८ ई० में प्राचीन जापान को नव-जीवन प्राप्त हुआ। इसी वर्ष 'मेइजी सम्बत्' का इस देश में प्रचार किया गया। बड़ी धूमधाम के साथ सब देशमें एक प्रधान अधिपति होनेका ढिंढोरा पीटा गया। सम्राट ने शपथ ले स्वदेश-गौरव-रक्षार्थ प्रतिज्ञा की।

प्रथम मेइजी सम्बत में मिकाडो मेघमुक्त प्रभाकरके समान राज-सिंहासनमें सुशोभित हो एक घोषणा प्रचार किया। उस घोषणा-पत्र में निम्न-लिखित पांच विषय लिखे गये थे—

(1) राज्यके यावतीय कार्य देशके विद्वान हितैषियों द्वारा परिचालित होंगे।

स्वरूप मिलता है। इसके सिवा पूर्व नरेशों के सञ्चित बहुतसा धन—जैसे, सोना, चांदी, मणि मुक्तादि-से आपका खजाना भरपूर है। अमेरिकाके एक जापान इतिहास वेत्ता ने लिखा है कि इनके भण्डार में दो सौ करोड़ से भी अधिक का बहु मूल्य धन संगृहीत है। आप घोड़े पर सवार हो भ्रमण करना बहुत पसन्द करते थे। इस लिये आपके अश्वशाला में पृथ्वी के प्रत्येक प्रान्त के रंग विरंगे घोड़े अबतक विद्यमान हैं। सद् ग्रन्थ और सम्वाद-पत्र पढने में भी आपकी अधिक प्रीति थी,इस कारण संसारके प्रति देश से आपके पठन-पाठन के निमित्त संवादपत्र मंगा कर आपके प्राईवेट सेक्रटरी लोग मेजों पर सजादिया करते थे। आप कभी कभी किसी विषय की अपनी बनाई हुई अपूर्व कविताएं पेपरों में छपा दिया करते थे। आप अपनी प्रजा व स्वबान्धियों से अति प्रेमपूर्वक व्यवहार किया करते थे।

सम्राट महिषी प्रिन्सेस 'हारुको' का जन्म २४ मई १८५० ई० को हुआ था। ६ फरवरी १८६६ ई० को मिकाडो के साथ आपका विवाह हुआ था। यह श्रीमती पतिव्रता, विदुषी और कार्य्य-प्रिय हैं। असंख्य दास दासियों से राज भवन परिपूर्ण होने पर भी आप निज कर-कमलोंसे पतिकी सेवा किया करती थीं। राज-कार्य्य का कोई गूढ विषय आ पड़ने पर सदैव

परामर्श लिया करते थे और आप
ही ओरका ही सुपरामर्श दिया करती
ने दीन, दरिद्र, पीडित व्यक्ति और
कार्य्योंके लिये आपसे अपरिमित
ती है उसकी गिनती करना भी
पति के समान आप भी सुकवि,
चती हैं। बहु सन्तति की जनक
सम्राट-दम्पति को समय २ में कई
अकाल मृत्यु पर शोक-ग्रसित
य द्वितीय, षष्ठ, सप्तम, अष्टम
वेत हैं। सुसाको, कुसाको,
मक यह राज-कन्यायें, जननी
व्रती और रूपवती हैं।

यशोहित हारू नोमिया अपने
र हैं। सन १८७९ ई० के ३१
हुवा था। ३ नवम्बर
अर्थात् जापानके युवराज
सन १९०० ई०
व्रती रूपवती

सम्राट आपसे परामर्श लिया करते थे और आप बहुधा प्रजाके हितकी ओरका ही सुपरामर्श दिया करती थी। राज्यके कितने दीन, दरिद्र, पीडित व्यक्ति और स्वदेश के उपकारी कार्य्योंके लिये आपसे अपरिमित सहायता मिला करती है उसकी गिनती करना भी असम्भव है। अपने पति के समान आप भी सुकवि, विद्वान और महा रूपवती हैं। बहु सन्तति की जनक जननी होनेके कारण सम्राट-दम्पति को समय २ में कई बार अपने बालकों के अकाल मृत्यु पर शोक-प्रसित होना पड़ा है। इस समय द्वितीय, षष्ठ, सप्तम, अष्टम और नवम कन्या जीवित है। मुसाको, फुसाको, नबुको, यफीको आदि नामक यह राज कन्यायें, जननी के समान विद्यावति, गुणवती और रूपवती है।

सम्राट के द्वितीय पुत्र 'यशोहित हारू नोमिया' अपने पिताके समान शुभगुण-सम्पन्न है। सन १८७९ ई० के ३१ अगस्त को आपका जन्म हुवा था। ३ नवम्बर सन १८८८ ई० को 'कोतसी' अर्थात् जापानके युवराज पदमें अभिषेक किये गये। सन १९०० ई० के १० मई को 'सादाको' नामक एक गुणवती रूपवती अभिजात राज कुमारी के साथ आपका विवाह हुवा और दूसरे वर्ष १९ अप्रेल १९०१ को युवराज पत्नीने प्रथम पुत्र प्रसव किया। बालक का नाम 'हिराहित' स्वर्गीय सम्राटने

३—मारकुईस आरीयोशी इयामागातो।

यह अब जापानके सर्व्व-प्रधान सेनापति हैं। इनका विद्या, बुद्धि और विक्रम असाधारण है। वयस इस समय ७८ वर्षकी होनेपर भी मारकुईस साहब देह और हृदयसे कुछ हीन नहीं हुवे हैं। इस समय आप जापानके फील्ड मार्शलके गौरवान्वित पदमें अधिष्ठित हैं।

४—काउन्ट कातसुरा।

गत रूस-जापान युद्धके समय आप जापानके 'दैजो-दैजिन" अर्थात् प्रधान-मन्त्री-पदमें विराजमान थे। युद्ध विद्यामें आप इयामागातोके प्रिय शिष्य एवम् कूट मन्त्रणाके लिये आईतो के समकक्ष हैं। आपके कौशल और सुमन्त्रणासे जापान साम्राज्यने थोड़ी ही दिनोंमें उन्नति करते २ सभ्य जगतको आश्चर्य्यान्वित कर लिया है।

५—मारकुईस सैयनजीकिन मतारु।

सन् १६०६ ई० से फरवरी १९१२ तक आप जापानके प्रधान मन्त्री-पदमें विराजमान थे। इस अल्प समयमें ही आपने जापानदेशके वाणिज्य सम्बन्धमें जिस प्रकार असाधारण उन्नति साधित किया है उससे आपकी



फील्डमार्शल यामागाटा।

बुद्धिमत्ता और कार्य्य तत्परताका महान परिचय संसार को मिल चुका है।

६—व्यारन कामुरा।

गत महायुद्धके समय आप जापानके पर-राष्ट्र सचिव (Foreign Secretary) थे। जापान साम्राज्यमें आप एक महान विलक्षण राज-नीतिज्ञ पुरुष कहकर सभ्य जगतमें विख्यात हैं। आपने अमेरिकाके पोर्टसमाउथ नामक नगरमें बहुत दिनों तक वास कर रूस-जापान युद्ध की पञ्चायत सभामें सम्मिलित रह जापान गवर्नमेन्ट की ओरसे सन्धि-पत्रमें हस्ताक्षर किया था।

७—मारकुईस ओयामा।

इनकी अवस्था अब ६५ वर्षकी है। गत महा युद्धमें आपका अद्भुत रण-पाण्डित्य और असाधारण सैन्य परिचालन शक्ति देख कर सभ्य जगत स्तम्भित हो गया था। गृहमें परिजनगणों से आप सदा अति भद्र व्यवहार किया करते हैं और सदैव हास्य-वदन और शान्त स्वभाव से रहते हैं, किन्तु रण क्षेत्रमें शत्रुओंका आप यमराज सदृश अनुभव होते हैं। आप सन १८६४ ई० में चीन-जापान युद्धमें ८० हजार सेना ले जाकर लड़े और शीघ्र विजय को प्राप्त किया था। गत

कर समग्र सभ्य जगत विस्मित और स्तम्भित हो गया है। इनका सङ्कल्प स्थिर और अध्यवसाय असाधारण हैं। मन्त्र गुप्त रखने में यह संसार के सब सेनापति से अग्रसर हो चुके हैं। एडमिरल महोदय किसी समय भी अधिक वार्त्तालाप नहीं करते। इनका घर एक साधारण गृहस्थके समान है। एकबार सरकारी चित्रकर "मरूकी" के जापान के नाना स्थानों में अपने छाया चित्र (Photograph) बेचना प्रारम्भ करने पर वह बहुत ही दुःखित हुवे थे। इनके पुत्र और कन्या भी बहुत सीधे सादे हैं। एडमिरल महोदय कई वार इगलेन्ड में गये हैं। एकबार भारत-भ्रमण भी कर गये हैं। आप इस समय जापान के प्रधान नौ सेनापतिके पदमें विराजमान हैं।

१२—एडमिल कामिमुरा।

आप जापानके द्वितीय नौ-सेनापति हैं। गत महायुद्ध में आपने ब्लाडिवष्टक (Vladivostok) बन्दर को घेरा था।

१३—व्यारन शिवशहा।

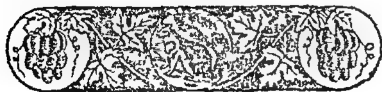
आप जापान साम्राज्य के कुबेर कहकर विख्यात हैं। इनके पास कई करोड़ की नकद सम्पत्ति विद्यमान है। आप बुद्धिमान, सुलेखक और प्राचीन पुरुष होने के



वाइस एडमिरल कामीमुरा।

कारण जापान में बहु माननीय समझे जाते हैं। अर्थनीति और वार्त्ता-शास्त्र में इनका प्रचुर अभिज्ञता है। गत महायुद्ध में ब्यारन महोदय अपनी कुल सम्पत्ति दी सम्राट के चरणों में रख युद्ध-क्षेत्र में जानेका विचार प्रकट करने पर सम्राट उनको बहु धन्यवाद दे ऐसा करने से रोक दिया था।

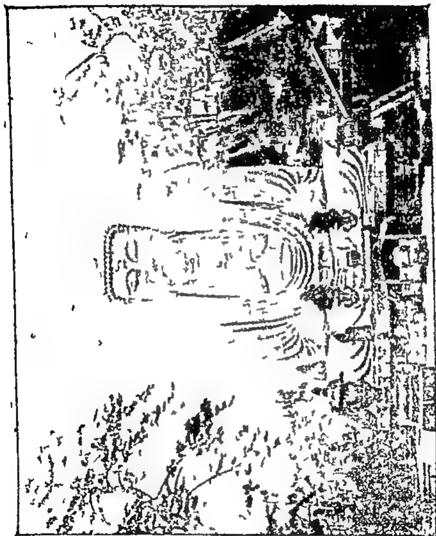
इनके अतिरिक्त जापानमें और भी बहुतसे कृतविद्य और कार्य्य-कुशल व्यक्ति निवास किया करते हैं जो संसारके नाना स्थानों में सरकार की ओरसे राज-दूत का कार्य्य कर चुके हैं। यह सबही सुपण्डित और राज-नीति विशारद हैं। इस समय जापानमें १६ प्रिन्स (Prince), ४५ मारकुईस (Marquis), १२० काउन्ट (Count), २०० वाईकाउन्ट (Viscount) और ब्यारन (Baron) उपाधिधारी ३०० जन महा सुशिक्षित और बहु शास्त्रज्ञ व्यक्ति विद्यमान हैं।



धर्म्म—प्रणाली।



हम पाहिले ही लिख आये हैं कि शिन्तो धर्म्म जापानका प्राचीन धर्म्म है। इस समय इस धर्म्मके लोग "सिनजू"कहे जाते हैं। सूर्य्य सहधर्म्मिणी 'अमृतराशु' व उषा देवी सिनजू लोगोंकी आराध्य देवी हैं। देश के नाना स्थानोंमें 'मियासिपा' नामक सिनजू लोगोंके धर्म्म-मन्दिर बने हुवे हैं। उन मान्दिरोंके पुरोहित लोग 'निगि' और 'कनेगि' नामसे पुकार जाते हैं। सिनजू लोग अपना मस्तक मुण्डन नहीं करते। कोई कोई अपना विवाह भी नहीं करते। सिनजू लोगोंमें एक विशेषत्व यह है कि यह लोग अपने देहके कपड़ों और शिरमें लगाने की टोपी पर अपना नाम, धाम आदि पूरा पता लिख दिया करते हैं। यह लोग मासके प्रथम, पञ्चदश और अष्टाविंशति दिवस को उपासनाके अतिरिक्त और कोई गृह कार्य्य नहीं किया करते हैं। सिनजू लोग राजाज्ञा-पालन तीर्थ भ्रमण, भिखारी-भोजन, पुण्य दिनमें दान देना आदिसे अपनी मुक्ति हो जानेका विश्वास किया करते हैं।



[कमाकुरा का डइबात्सु नामक बुद्ध की बृहत् मूर्ति । (यह मूर्ति ५० फीट ऊंची है।)]

चित्रशाला प्रेस, ८१८ सदाशिव पेठ, पुना सिटी

ईसवी सन् के छटी शताब्दी में चीन देशके प्रचारक लोग जापान में बौद्ध धर्म का प्रचार करना प्रारम्भ किया। इसी समय जापान में 'शिन्तो' धर्म भारतीय तान्त्रिक धर्म और चीन दार्शनिक कनफिउसियास प्रचलित एक प्राचीन धर्म विधमान था।

इस समय जापान के अधिकाश व्यक्तिही बौद्ध धर्मावलम्बी हैं। हर एक महल्लों में बौद्ध धर्म मन्दिर और पुरोहित लोग देख पड़ते हैं।

जापान में प्रत्येक गृहस्थ के मकान में तीन पवित्र स्थान होते हैं (१) 'कामिदाना' अर्थात् सृष्टिकर्ता भगवान् के पूजा का स्थान। (२) 'बूदसूदान' अर्थात् बुद्ध देवी। (३) 'इऊजिगमी' अर्थात् कुल देवता का गृह। इन सब स्थानों में प्रतिदिन यथारीति पूजा हुआ करती है। सिनजू लोग देवता के सन्मुख दर्पण, स्वच्छ वस्त्र आदि रख फिर उन्हें आप व्यवहार किया करते हैं।

राजप्रासाद में तीन पवित्र मन्दिर हैं—(१) काशिको दोकोरो (२) कोराईदेन (३) शिनदेन। इन तीनों पवित्र स्थानो में देश हितकर समाजोपकारी विषयों की आलोचना हुआ करती है।

जापानवासी सिनजू और बौद्ध लोगों में किसी की मृत्यु होजाने पर उसकी देह फूंक दी जाती और कंगालों को भोजन खिलाया जाता है। भारत की तरह हट्टे कट्टे महाब्राह्मणों को व्यर्थ व्यय करने के लिये धन नहीं दिया जाता है।

पैरों तक लम्बा झूला करता है, और इसके भीतरी भाग में असंख्य छोटे २ जेब होते हैं। "ओबी" नामक ७॥ हाथ लम्बा कपड़े से कमरबन्द का काम लिया जाता है। कामुनो और ओबी साधारणत कपास के सूत से ही बनाया जाता है। कोई रेशमी कपड़े से भी बनवा लिया करते हैं। जापान में जेवर पहिरने की रीति बहुत ही कम देख पड़ती है।

जापान के बालक बालिकाओं को बाल्यावस्था से ही पिता, माता, ज्येष्ठ भ्राता आदि गुरुजनों का आदेश प्रति पालन करने का पाठ पढ़ाया जाता है। इस कारण जापान लोगों को पारिवारिक जीवन में कोई अशान्ति नहीं उठाना पड़ता है। जापानी बालिका शैशव से ही रन्धन, गृहमार्जन शय्या रचना, निमन्त्रित लोगों को स्वादिष्ट भोजन कराना आदि आवश्यकीय गृह कार्यों को अति यत्न पूर्वक सम्पन्न कर लिया करती हैं।

जापान कुमारी अति अल्प वयस से ही पतिव्रत धर्म की शिक्षा पाया करती है। घोड़े पर चढ़ना, नदी जल में कागज की नौका चलाना, कृत्रिम युद्ध विवाहाभिनय, पुतलियों की तीर्थ यात्रा, धूल में खेलना आदि इस देश के बालक बालिकाओं का प्रधान क्रीड़ा है।

जापान में प्रत्येक बालक बालिका का योग्य वयस ही में विवाह हुआ करता है। उच्च श्रेणियों में पात्र की २२ वर्ष और पात्री की १६ वर्ष की अवस्था हो जाने पर विवाह किया



दो सुन्दर लड़कियां।

ह्म हुआ करती है। पिता,माता आदि प्रकृत अभिभावक विवाह सम्बन्ध स्थिर किया करते हैं। इससे कोई पक्ष ाग प्रदर्शन नहीं करता।*

निज परिवार व आत्मीय स्वजन में कन्या का विवाह बन्ध स्थिर नहीं होसकता है। कोई जापानी युवती स्व छा से स्वयम्वर कर विवाह स्थिर नहीं कर सकती है। प्रदाय विशेष में कन्यापन और वर-पन प्रचलित है। वाह की रजनी में पान भोजन के अतिरिक्त अन्य कोई शेष अनुष्ठान नहीं किया जाता है। स्त्री आचार प्रचलित । विवाह समाप्त होने पर वरवधू बहुमूल्य वस्त्र धारण र गुरुजनों की सेवा में सौन्दर्यवर्द्धन और दीर्घजीवन मना के लिये आशीर्वाद प्रदान करने का प्रार्थना किया रते हैं। विवाह में एक निष्ठुर प्रथा यह प्रचलित है कि पति युगल में से किसी की या दोनों की मृत्यु हो जाने र उसी विवाह की पोशाक में मृत देह को आच्छादित कर

* वर्तमान के जापानी शिक्षित समाज में एक नूतन प्रथा का प्रचलन आ है। विवाह सम्बन्ध स्थापन के पहिले भावी जमाता को निमन्त्रण कर पने मकान में ले आ उसको उसकी भावी पत्नी से वार्तालाप करने का समय दिया जाता है। साक्षात हो जाने पर यथा क्रम कन्या से कन्या का ण, विद्या और रूप के सम्बन्ध में वर तथा उसी प्रकार युवती भी अपने ति की सब प्रकार रूप गुण सुशीलता आदि की परीक्षा कर लिया रती है।

प्त हुआ करती है। पिता माता आदि प्रकृत अभिभावक वेवाह सम्बन्ध स्थिर किया करते हैं। इससे कोई पक्ष ग प्रदर्शन नहीं करता।*

लिन परिवार व आत्मीय स्वजन में कन्या का विवाह न्ध स्थिर नहीं होसकता है। कोई जापानी युवती स्व प्रा से स्वयम्वर कर विवाह स्थिर नहीं कर सकती है। प्रदाय विशेष में कन्यापन और वर पन प्रचलित है। ाह की रजनी में पान भोजन के अतिरिक्त अन्य कोई ोप अनुष्ठान नहीं किया जाता है। स्त्री आचार प्रचलित । विवाह समाप्त होने पर वर-वधू बहुमूल्य वस्त्र धारण गुरुजनों की सेवा में सौन्दर्यवर्द्धन और दीर्घजीवन मना के लिये आशीर्वाद प्रदान करने की प्रार्थना किया रते हैं। विवाह में एक निष्ठुर प्रथा यह प्रचलित है कि पति युगल में से किसी की या दोनों की मृत्यु हो जाने उसी विवाह की पोशाक में मृत देह को आच्छादित कर

* वर्त्तमान के जापानी शिक्षित समाज में एक नूतन प्रथा का प्रचलन ा है। विवाह सम्बन्ध स्थापन के पहिले भावी जमाता को निमन्त्रण कर ने मकान में ले आ उसको उसकी भावी पत्नी से वार्त्तालाप करने का ाय दिया जाता है। परिचित हो जाने पर यथा क्रम कन्या से कन्या का , पिता और इस के पश्चात् में वर तथा उसी प्रकार युवती भी अपने े की सब प्रकार रूप गुण शीलता आदि की परीक्षा कर लिया ती है।

अन्त्येष्टि क्रिया सम्पन्न की जाती है। इसलिये उन कपड़ों को जापानी लोग बड़े यत्न के साथ रख छोड़ते हैं।

बालिका वधू विवाह के कुछ दिन बाद ही पतिगृह में चली जाती है। वहां उसको सास -ससुर आदि गुरुजनों के आधीन निवास करना पड़ता है। अर्थात् उसे नित्य प्रातः काल सबसे पहिले शय्या से उठकर संसार के यावतीय कार्य सम्पन्न करना पड़ता है। जापानी युवती सदा अपने पति के आज्ञाधीन रहा करती है। वह अपने पति को देवता के समान समझ सदा भक्ति भाव प्रदर्शन किया करती है। स्वामी के कुचरित्र होने पर भी वह उसे कुछ नहीं कहती। उन लोगों को विश्वास है कि प्रवृत्ति शान्त होने पर स्वामी का चरित्र स्वयमही शुद्ध होजावेगा। सचमुच में जापानी रमणीही पति-हृदय की चिर प्रह्लादिनी, गृह-सरोवर की प्रफुल्ल-कमलिनी, संसारतरु की विनोद-वल्लरी, शान्तिकुञ्ज की सुरभि मल्लिका है।

प्राचीन और मध्ययुग में जापान में बहु विवाह प्रथा प्रचलित था। "तेहो संहिता" नामक जापानी प्राचीन धर्म शास्त्र के व्यवस्थानुसार भार्य्या व्याभिचारिणी, मिथ्या भाषिणी, गुरुजन विद्वेषिणी, कन्या-प्रसविनी*, चौर्य्यादि दोषाक्रान्ता और पीड़िता होने पर स्वामी परित्याग कर सकता है।

* The Commentators of the Tuho Code say that the sterility ... does not mean actual barrenness but the failure of male issue — अर्थात्, तेहो संहिता के टीकाकार ने लिखा है कि केवल वन्ध्या नहीं, कन्या प्रसविनी स्त्री होने पर भी पुरुष दूसरा विवाह कर सक्ता है।

इस समय स्त्री व्यभिचारिणी, अभिभावक के असम्मति से गृह त्यागिनी और चौर्य्यादि दोषाक्रान्त होने पर राज विधान की सहायता द्वारा स्त्री परित्याग करना पड़ता है। जो लिखा पढ़ी कर विवाह सम्बन्ध स्थिर किया करते हैं वह अपनी लिखित प्रतिज्ञा (तहरीरी एकरार) के अनुसार 'कार्रवाई' किया करते हैं।

जापान में सब श्रेणी के निवासियों में स्वइच्छानुसार विधवा विवाह प्रथा प्रचलित है। उच्च और सम्भ्रान्त गृहों में पहिले भारतवर्ष की नाई पति की मृत्यु पर कोई २ सती होजाया करती थी। किन्तु राजनियमानुसार अब यह प्रथा एक बार ही रोक दी गई है।

जापान में भिन्न २ आख्याधारी अनेक वंशों का परिचय पाया जाता है। प्रत्येक वंशही में एक जन "इकजीनोकोमी" अर्थात् प्रधान है। पहिले जापान में प्रत्येक वंश की रेजिस्टरी हुआ करती थी और सरकारी रेजिस्टर में प्रत्येक वंश के प्रधान-व्यक्ति का नाम और वास स्थान लिखा रहता था। एक रजिस्टर में ११८२ वंशों का उल्लेख है।

जापान के प्राचीन धर्म्म-पुस्तक में त्याज्य पुत्र का उल्लेख है। पुत्र के वंश के प्रधान पुरुष का अपमान करने पर, वंश गौरव के कोई हानिकर कार्य्य करने से अथवा उन्मत्त (पागल) व क्लीव होने पर या कि चोरी आदि का बुरा स्वभाव होने से पिता द्वारा त्याज्य होसकता है। इस

समय सरकारी कानून की सहायता बिना कोई व्यक्ति अपने पुत्र को परित्याग नहीं कर सकता है।

जापान में "कियो योशी" अर्थात् पोष्यपुत्र ग्रहण की प्रथा प्रचलित है। चार पुरुषों के मध्यस्थित ज्ञाति से १० वर्ष से कम आयु का बालक गोद लिया जाता है। किन्तु किसी बालक को अपने घर में रख उसके साथ अपनी लड़की का विवाह दे तो वह गोदी में लिया हुआ समझा जा सकता है। इस प्रथा को जापान में "मुकोयोशी" कहते हैं। वर्त्तमान में यह प्रथा अधिक प्रचलित होजाने के कारण नवीन दीवानी आईन की ८१६ दफे में और रजिस्टरी आईन के १०२ धारा में "मुकोयोशी" के सम्बन्ध में कई एक अभिनव नियम बना लिये गये हैं।

जापान में ज्येष्ठ पुत्रही पिता का सम्मान "वोटेको सोजाकू" और सम्पत्ति "आईसन सोजाकू" प्राप्त किया करता है। पुत्र के अभाव पर मृत व्यक्ति का पिता, पिता के अभाव पर माता, उसके न होने पर प्रथम पत्नी, उसके अभाव में मृतक का सहोदर, उसके भी अभाव होने पर अन्य स्त्रियां, तदाभाव में मृतक का नातेदार मातागण सम्पत्ति के उत्तराधिकारी हो सकते हैं।

अन्न, मछली, शाक सबजी जापानी लोगों का प्रधान भोजन है। अति सम्भ्रान्त व्यक्ति से दीन हीन गरीब तक सबही लोग भात, मछली और शाक सबजी आहार किया करते हैं।

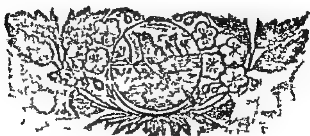
जापान में शूकर और गो मांस भक्षण करने की प्रथा प्रचलित है। वहां कोई भी गो हत्या नहीं कर सकता। इस्तान और युरोप से आये हुवे कोई कोई लोग विदेश से मंगा कर बीफ भक्षण किया करते हैं। तरकारी विशेष में दूध, घी, नवनीत, तैल और चर्बी अधिक भोजन किया करते हैं।

जापान के अधिकांश नर नारी चाह पान किया करते हैं। "साकी" और "सय" जापान की जातीय सुरा है इस लिये उसको प्राय सबही लोग पान किया करते हैं। साकी चावल से बनाई जाती है। वह पहिले पहल ओशाका नगर में निर्म्मित हुई थी इस लिये इसका नाम "साकी" रक्खा गया है। चिकित्सक के अनुमति विना कोई व्यक्ति जापान में अफीम, गांजा, चरस का सेवन नहीं कर सकता है। यहां सिगारेट और विविध प्रकार की ताम्रकूट (तम्बाकू) सेवन की प्रथा अधिक है।

जापानी लोगों में अब तक अनेक कुसंस्कार वर्त्तमान हैं। रात्रि समय कोई निमक उधार लेता देता नहीं। मास के शेष शनिवार को वस्त्र धुलाना दोष समझा जाता है। विवाह के दिन वर कन्या की परिच्छद लाल या बैंगनी रंग की होने पर उभय में दाम्पत्य बन्धन स्थायी नहीं होगा। ग्रहण के समय जलपान करने पर शरीर में विष प्रविष्ट होजाता है। कुकुर के रोने पर गृहस्थ का अकल्याण होता है। मुर्गे के

गृह के ऊपर चढ़ जाने पर उस मकान में आग लग जाने की सम्भावना है। मछली पकड़ते जाते समय यदि मार्ग में पुरोहित से साक्षात होजाय तो अपने गृह में लौट आजाना ही उचित है। ग्राम में वसन्त और कालेरा प्रभृति छुआ छूत के रोग के फैलने पर गृहस्थ लोग अपने घर के बाहर दरवाजे में लिख दिया करते हैं कि "इस मकान में फालतू आदमी एक भी नहीं हैं।" जापानी लोग यात्रा समय, "बकबक" और "सूकि" नामक कच्छुप देखने, पर अति आनन्द अनुभव किया करते हैं।

जापानी लोग सदैवही स्वच्छ वस्त्र धारण करना बहुत पसन्द करते हैं। नित्य प्रति ३ बार स्नान किया करते हैं। यहां प्रत्येक गृहस्थ के मकान में कई एक फूलों के पेड़ होते हैं, एक टुकड़ा क्रीड़ा भूमि और एक कुआं देख पड़ता है। जापानी लोग खुली हवा सेवन करने पर अति प्रसन्न हुआ करते हैं।



शिक्षा-प्रणाली।



सुशिक्षाही सर्वविध उन्नति की मूल है। साम्राज्य की परमोन्नति, वाणिज्य का विपुल विस्तार, स्वदेश का श्रीपुष्टि साधित करना, ज्ञानकी परिधि प्रसारण आदि सब विषय सुशिक्षा से ही प्राप्त हुआ करते हैं। जापान-वासियों ने गत ३५ वर्षों में शिक्षा विषय में जो उन्नति लाभ किया है, वह संसार के इतिहास में अति अपूर्व और सर्वापेक्षा विस्मयजनक है।

जापान के शिक्षा का इतिहास सन् १८६८ ई० से प्रारम्भ होता है। इसके तीन वर्ष बाद गवर्णमेण्ट की आज्ञा से जापान में 'मचासो' अर्थात् शिक्षा-विभाग स्थापित हुआ। १८७२ ई० में शिक्षा विषय के कुछ नियम निर्मित हुए, उसी से शिक्षा-विभाग में नवयुग का आविर्भाव हुआ।

इस समय जापान में चार श्रेणी के विद्यालय देख पड़ते हैं, यथा—प्राथमिक विद्यालय, मध्य विद्यालय, उच्च विद्यालय और विश्वविद्यालय।

प्राथमिक विद्यालय जापान के प्रति 'सान' अर्थात् देहातों में देख पड़ते हैं। इनमें ६ वर्ष से १४ वर्ष तक के बालक

बालिकाओं को जापानी भाषा में शिल्प, कृषि, वाणिज्य, गणित और स्वास्थ्य-रक्षा विषयक साधारण विषयों की सुशिक्षा दी जाती है, पीड़ित और अति दरिद्र के सिवा ग्राम के सब बालक बालिकाओंही को इन विद्यालयों में पढ़ने आना पड़ता है।

यह समस्त विद्यालय गवर्णमेण्ट और ग्राम-वासियों के द्रव्य की सहायता से चला करते हैं। सन् १६०२ ई० में इस श्रेणी के विद्यालयों की संख्या २८२८७, छात्र और छात्री संख्या ५० लाख के करीब और शिक्षक और स्त्री-शिक्षकों की संख्या २ लाख के करीब थी।

जापान के प्रति जिलों में ही एक व उससे अधिक मध्य विद्यालय अवस्थित हैं। इन सब स्कूलों में १४ से २० वर्ष तक के बालक बालिकाओं को जापानी, चीना, और अंग्रेजी भाषा में साहित्य, इतिहास, भूगोल, गणित, ज्यामिति, विज्ञान, रसायन, ज्योतिष प्रभृति विविध विषय की शिक्षा दी जाया करती है। जिसमें छात्र और छात्रियों की धर्म-ज्ञान, नीति और शारीरिक शक्ति ठीक तौर से बनी रहे उसके प्रति विशेष दृष्टि रक्खी जाती है। सन् १९१२ ई० में इस श्रेणी के स्कूलों की संख्या १२९२, छात्र और छात्रियों को संख्या ५ लाख के करीब थी।

उच्च विद्यालय राजधानी और प्रधान प्रधान नगरों में अवस्थित है। इनमें जापानी, अंग्रेज़ी और जरमन भाषा में

गणित, दर्शन, साहित्य, विज्ञान, आईन, चिकित्सा शास्त्र, कृषि, वाणिज्य, भूतत्व प्रभृति विविध विषयों की शिक्षा दी जाया करती है। इन विद्यालयों में अट्ठारह वर्ष से निम्न अवस्था का कोई बालक प्रविष्ट नहीं होसकता है। सन् १६१२ ई० में जापान के उच्च विद्यालयों की संख्या १५ और छात्र संख्या ८६१२ थी।

जापान में १०० उच्च बालिका विद्यालय, और ५४ नारमल विद्यालय है। नारमल स्कूलों के विद्यार्थियों को चार वर्ष और स्त्री विद्यार्थीनियों को ३ वर्ष अध्ययन करना पड़ता है। नारमल विद्यालय के शिक्षक और शिक्षयित्री को प्रस्तुत करने के लिये और भी उच्च विद्यालय है। इनमें एक टोकियो राजधानी में और दूसरा तीसरा हिरोसिमा और ओशाका नगर में अवस्थित है। गत पूर्व वर्ष में इनकी छात्र संख्या ११ सौ और छात्री संख्या ५ सौ के करीब थी।

जापान के मेदे गाकू, अर्थात् विश्वविद्यालय दो हैं। इनमें एक राजधानी और दूसरा मियाकू शहर में है। उच्च विद्यालय से पास छात्रों के सिवा और कोई विद्यार्थी इनमें प्रविष्ट नहीं होसकता है।

टोकियो विश्वविद्यालय-यहा आईन, चिकित्सा, इनजिनियरिङ्ग, साहित्य, विज्ञान, और कृषि विद्या विषयक ८ कालेज है। आईन विभाग के कालेजों में चिकित्सा शास्त्र भी पढाया जाता है।

इनजिनियरिङ्ग-विभाग में गृह निर्माण, रसायन, बारूद खनि और धातु सम्बन्धी ९ प्रकार पठन पाठन के विषय हैं। साहित्य कालेज में दर्शन, जापानी साहित्य, चीनी साहित्य, इतिहास और विविध वैदेशिक साहित्य पढ़ाये जाते हैं।

विज्ञान-कालेज में गणित, ज्योतिष, पदार्थ विद्या, प्रणाली विद्या उद्भिज शास्त्र आदि सात प्रकार के पढ़ने के विषय हैं। कृषि-कालेज में कृषि विद्या, वन विद्या आदि चार प्रकार के पाठ्य विषय हैं। इन सब विद्यालयों में एक २ वृहत पुस्तकालय और अस्पताल हैं। आईन कालेज में कितने दिन पढ़ना होगा उसका कुछ निश्चय नहीं हैं, विद्यार्थियों के परिश्रम के अनुसार इसका निश्चय होता है। अन्यान्य कालेजों में तीन वर्ष अध्ययन करना होता हैं। किसी भी विभाग के छात्रों को २ बार फेल होजाने पर फिर आगे पढ़ने की अनुमति नहीं दीजा सकती है।

टोकियो-युनीवरसिटी में वर्त्तमान वर्ष आईन विभाग में ५१, चिकित्सा विभाग में ४८, इनजिनियरिङ्ग-विभाग में ५०, साहित्य-विभाग में ४०, विज्ञान-विभाग में ४०, और कृषि डिपार्टमेण्ट में ३० सुयोग्य प्रोफेसर व प्रिन्सपेल हैं। यहा से चिकित्सा शास्त्र में उत्तीर्ण होने से 'ईगाकुशी' इनजिनियरिङ्ग विद्या में पास होने से कोगाकुशी, साहित्य में उत्तीर्ण होने से बान गाकुशी, विज्ञान-शास्त्र में अभिज्ञता प्राप्त करने पर रिगाकुशी और कृषि विद्या में उत्तीर्ण होने पर नागाकुशी उपाधि मिलती है।

जापान-गवर्नमेण्ट टोकियो विश्वविद्यालय के लिये प्रतिवर्ष प्राय ४० लाख रुपया व्यय किया करती है। इस युनीवरसिटी की छात्र संख्या प्रति वर्ष किस हिसाब से बढ़ रही है यह नीचे लिखी हुई तालिका से ज्ञात होगा।

विषय सन्	१८९०	१८९५	१९००	१९१०
आईन	३०१	४७२	८७०	१५०८
चिकित्सा	१९६	७०३	८०१	११३३
इंजिनियरिङ्ग	१९८	२९५	४९३	९०१
साहित्य	१३३	२३६	४०३	८६०
विज्ञान	११३	२०६	६०५	११३
कृषि	८८६	•३२	१११६	२०००
विविध	४८	१०५	१९३	१५०

कियातो-विश्वविद्यालय में आईन, चिकित्सा, विज्ञान, एवम् इंजिनियरिङ्ग आदि के ८ कालेज हैं। हरेक कालेज में विद्यार्थियों को ३ वर्ष अध्ययन करना पड़ता है और सब नियमादि टोकियो-विश्वविद्यालय के अनुरूप ही हैं।

विश्वविद्यालयों की फीस यथाक्रम ३७॥) रु० वार्षिक के हिसाब से है। इंजिनियरिङ्ग विभाग के छात्रों को और भी अधिक १५) रु० वार्षिक जमा करना पड़ता है। उक्त दो विश्वविद्यालय से गत वर्ष प्राय० १२००० छात्र उत्तीर्ण हुए हैं।

टोकियो-और कियातो युनीवरसिटी के सिवा जापान में शिक्षा, कृषि और स्त्री शिक्षा संक्रान्त और भी कई महाविद्यालय आदि हैं।

उक्त कालेजों के सिवा जापान में उच्च और निम्न श्रेणी के १८९९ पाठशालायें वर्त्तमान हैं। उनमें ४७ कृषि, २०० शिल्प वाणिज्य विषयक कालेज विशेष उल्लेख योग्य हैं। शिल्प विद्यालय में टोकियो उच्च शिल्प शिक्षालय, ओशाका शिल्प विद्यालय और कियातो का शिल्प विद्यालय जगत प्रसिद्ध हैं। इन सब विद्यालयों में रासायनिक, वैद्युतिक यन्त्रादि का बनाना, रङ्ग रङ्गना, वस्त्र बुनना, चीनी मट्टी के बासन बनाना, मद्य प्रस्तुत करना, धातु विद्या, मानचित्र अङ्कित करना, चित्र-विद्या आदि विविध-विषय हाथ से करके सिखलाए जाते हैं।

इस समय जापान में २५ मूकबधिर स्कूल और २०० किण्डर-गार्टन पाठशालायें विद्यमान हैं।

जापान सरकार ने सन् १८७० ई० से शिल्प-विज्ञान शिक्षा के लिये विदेश में विद्यार्थियोंको भेजना आरम्भ किया है। सन् १८७२ ई० में ३५० छात्र भेजे गये थे। १९१० ई० में केवल १७ जन मात्र भेजे गये थे। पहिले जापानी कालेजों के लिये युरोप अमेरिका से अध्यापक बुलाना पड़ता था। इस समय उनकी कुछ जरूरत नहीं रह गई है, जापान वासी ही इस योग्य होगये हैं। समस्त जापान में वर्त्तमान समय प्रायः

८० अस्सी लाख छात्र छात्री विविध पाठशालाओं में पठन पाठन करते हैं। जापान में १०० लड़कों में ८५ लड़के स्कूल में पढ़ने लिखने जाया करते हैं। अमेरिका के युक्त-राज्य (इऊनाइटड स्टेटस) पृथ्वी में सर्वपेक्षा सुसभ्य देश कहकर विख्यात है, किन्तु प्राथमिक शिक्षा विषय में यह शक्तिशाली महादेश भी जापान की बराबरी नहीं कर सकता है।

जापानी लोगों ने इङ्गलैण्ड से नौ विद्या, फ्रांस से युद्ध विद्या, जर्मनी से चिकित्सा-शास्त्र, और अमेरिका से शिक्षा-प्रणाली सीख कर सब अपने स्वदेश के अनुकूल और उपयोगी बना लिया है। किसी विषय में हम भारत-वासियों के समान अविकल नकल करकेही चुप नहीं होगये हैं। जापान सम्राट मिकाडो ने एक बार अपने व्याख्यान में जो कहा था उसका कुछ अंश यों है।

"It is designed henceforth Education shall be so diffused that there may not be a village with an ignorant family nor a family with an ignorant member"

सम्राट की यह उक्ति वर्त्तमान में सार्थक होगई है।



जापानी साहित्य
और सम्वादपत्र।



पानी भाषा का साहित्य-भण्डार पृथ्वी के अन्यान्य जातियों के साहित्य के समान ऐश्वर्य्य से परिपूर्ण है। जापानी साहित्य में कालीदास, शेक्सपियर, मिलटन और तुलसीदास के समान प्राचीन कवियों की कवितायें विद्यमान हैं।

"कोजिकी" जापान की सर्वापेक्षा प्राचीन ग्रन्थ है। यह भारतीय दर्शन ग्रन्थों के समान विविध प्राकृति विषयों से परिपूर्ण है। कोजिकी के किसी किसी अध्याय में हमारे पुराण ग्रन्थों की तरह विचित्र उपाख्यान भी भरे हुए हैं यह पुस्तक गद्य में है और बहुत बड़ी है।

जापानी लोगों के सबसे प्राचीन नीति शास्त्र का नाम 'बूसिडो' है। हिन्दुओं में वेद, मुसलमानों में कुरान, कृस्तानों में बाइबिल जिस प्रकार पूजनीय धर्मग्रन्थ माना जाता है उसी प्रकार जापानी लोगों का यह धार्मिक ग्रन्थ है। जापान के बौद्ध लोग इस ग्रन्थ को भगवान भास्कर के सम्मुख से

निकली हुई देव वाणियों का संग्रह मानते हैं। इस महा ग्रन्थ में परमात्मा, जीवात्मा, पुनर्जन्म, पर जन्म, पाप, पुण्य, स्वास्थ्य, पीड़ा, राजभक्ति, स्वदेश भक्ति आदि विषयों की बहुविधि आलोचना की गई है।

पूर्व काल में बूसिडो (Busido) अर्थात् क्षत्रिय जाति के भिन्न अन्य कोई इस पुस्तक के पढ़ने का अधिकारी नहीं था। इस समय जापान के उन्नतिमय जगत् में यह ग्रन्थ सर्व साधारण की वस्तु होगई है। जापान की सभी जातियां इसको पाठ कर लाभ उठाती हैं। बूसिडो के कई उपदेशों का भाषान्तर हम नीचे लिखते हैं।—

१—आडम्बर परित्याग कर दीन भाव से जीवन यात्रा का पथ पार करो। २—आत्म अवस्था में सन्तुष्ट रह स्वधर्म का प्रतिपालन करो। ३—हिंसा, द्वेष, मिथ्या, चातुरी, त्याग कर सत्य और सरलता का आश्रय ग्रहण करो। ४-परलोक के विषय में विश्वास स्थापित कर धर्माचरण करो। ५—विवेक की सहायता से पाप पुण्य का निर्णय करो।

कोजिको, बूसिडो आदि ग्रन्थ पठन करने से स्पष्टही समझ में आजाता है कि प्राचीन युग के जापानी साहित्य में खूबही संस्कृत भाषा की रीति नीति और शब्दों की भरमार होगई थी। संस्कृत के समान जापानी कविता में भी शब्दों पद्धति लगाई जाती है और बहुत से जापानी शब्दों का संस्कृत शब्दों से मिलान होजाता है। यथा-श्रामन (श्रवण)

सर (स्वर्ग) सामुरे (समर) यियूतसू (यियूसूत) सैतदन (चन्दन) इत्यादि ।

कृस्तानी पञ्चम और षष्ठ शताब्दि में जापानी साहित्य बौद्ध धर्म नवीन उपादानों से अलकृत हो गया। उसी समय चीनी भाषा से कई बड़े बड़े ग्रन्थ जापानी भाषा में अनुवादित किये गये। इन सब ग्रन्थों में प्रात्ता पारिमिता महाप्रात्ता पारिमिता, अामिताभ सूत्र, रतनज ल सूत्र, महानिर्वाण सूत्र आदि कई एक ग्रन्थ इस समय हमारे संस्कृत भाषा में नहीं मिलते हैं। इनमें ललित विस्तार, धर्मपद, सांख्य दर्शन, चन्द्रगर्भ और सूर्य्यगर्भम, महापन सूत्र आदि धर्म ग्रन्थ अति विख्यात हैं। सप्तम शताब्दि के साहित्य में प्राचीन भारत के समान कविता का अति प्रचार जापान में हो गया था । इसी समय चीन दार्शनिक 'कनफिऊसिबास' की नीति शिक्षा, जापानी मनुष्यों के हृदय को धर्मानुरक्त करने के लिये जापानी कवियों ने विविध विषय की कविता लिखना प्रारम्भ की। द्वादश शताब्दि में वह सब पुस्तकें इतिहासों के समान लिखी जाने लगी। इसी समय 'मुरासाकि सिकबू' नामक एक जापानी महिलाने गेञ्जिमोनो गातारि नामक एक पद्य ग्रन्थ निर्मित किया। "सुप्रसिद्ध' मनयाशियों" अर्थात् वृक्षपत्र नामक कविता पुस्तक भी इसी शताब्दी में एक जापानी महा विद्वान् ने लिखी।

त्रयोदश ई० में जापान के 'नौ' नामक एक श्रेणी के

साहित्य की उत्पत्ति हुई थी। यह अनेकांश में आधुनिक गीत कविता के समान थी। इस समय जापान में "कोई ओजन" Kayee Ozcan अर्थात् प्रहसन पुस्तकों की सृष्टि हुई। षोडश शताब्दी के जापानी साहित्य में विविध उपन्यास (नितजिवू) बने और नाटक (जोराखिन) भी लिखे जाने लगे।

इस समय जापान में जो कई एक छन्द अधिक प्रचालित है उनमें "तोको" सर्व प्रधान है। प्राय सैकड़े पीछे ८० कविता इन्हीं छन्दों में रची जाती है। इसमें ३१ अक्षर सम्वलित पञ्च पद में यथा क्रम स ५ ७, ५ ७, और ७ अक्षर रहते हैं। नीचे हम सम्राट रचित एक कविता और उसका भाषान्तर नागरी भाषा में लिखते हैं:-

(१) कोरे ओया मिना। ईकुछा नोमि व यानि ईदो दातेते। ओकि, नाइया हितोरि इयमादा मरवान। (१) स्वदेश माता के सुसन्तान उन्मुक्त कृपाण हाथों में ले युद्ध करने के लिये गये हैं, उन लोगों को धन्यवाद है। (२) चियोइया कुरु, कामिनो कोको रोनोकानो योरान। ओयागा कुन तामिना छूकछू माकोते ओया। (२) जगदीश्वर उन लोगों पर दया करें और खूब उन लोगों में स्वदेश के लिये ऐक्यता और बल बुद्धि की वृद्धि करें। (३) कुनिओ, आ मोओ मिछि नि फुतात छूओया, निकारि किर कूछ लोनिओ यानी तात छू मोता तामो मा (३) समरक्षेत्र उन वीरोंके लिये रङ्ग महल है, स्वदेश सेवासे अधिक संसार में मनुष्यों के लिये अन्य कोई सुकार्य्य नहीं हो सक्ता है।

इस समय जापनी भाषा के एक से एक बढ़कर महा विद्वान अनेक लेखक अपनी मातृभाषा के साहित्य भण्डार को संसार के सभी प्रांतों से उत्तमोत्तम ग्रन्थ खोज और उनको भाषान्तर कर भर चुके हैं। गत ३५ वर्ष में जो सब विदेशी ग्रन्थ जापानी भाषा में अनुवादित हुए हैं उनमें स्माइलस, मिल, स्पेन्सर और क्यान्ट की ग्रन्थावली जगत् प्रसिद्ध है। उपन्यासों में अनेष्ठ मलट्रैवार, आदि सब से पहिले अनुवादित हुए थे। टेलीमेकस और राबिन्सन क्रूसा के पाठक जापान में अधिक हैं। इसके सिवा डूमा, घर्न कारपन्टर, शागार्ड आदिक सुप्रसिद्ध उपन्यास लेखकों की ग्रन्थावली का अनुवाद भी जापानी साहित्य भण्डार में सुशोभित है।

अनुवादित कविता पुस्तकों में ग्रे की एलिजी, गोल्ड स्मिथका डेजर्टेड विलेज, टेनिसन का एनक आर्डन, शाक्स पियर का सर्व पुस्तकावली विशेष उल्लेख योग्य है। जापानी भाषा के उपन्यास लेखकों में पेकिनते निहिको, मानतुई, इक्कु और न्यानसी आदि ग्रन्थकार जगत् विख्यात हैं। जापानी साहित्य के समालोचक हम लोगों को यथा क्रम से लिटन, स्काट, हिओगो, डिकेन्स, और कालिन्स के मुकाबिले का समझते हैं। मानवचरित्र अङ्कन में वेकिनको शेक्स पियर के समान समझा जा सकता है।

जापान के सब से प्राचीन सम्वाद पत्र का जन्म सन्

१६०३ का हुआ था। इसका नाम ओमिओर है। इसके पीछे के उल्लेख योग्य सम्वाद-पत्रों के नाम केहगो और सिम्बू हैं। १७७१ ई० से ञिम्बू जिजी नामक और एक बड़ा पत्र छपता है। जापान के कोई कोई सम्वाद पत्र दैनिक के सिवा दिन में २ बार तक निकलते हैं।

सन् १८७२ ई० में जान. ब्लाक की ओर से "जापान. हेरल्ड" नामक एक बहुत बढ़िया दैनिक पत्र अंग्रेजी में निकला। उस समय से जापान में सम्वाद पत्रों की संख्या दिन पर दिन वर्तमान में बहुत बढ़ गई है। सन् १८७८ ई० में जापान में सम्वाद पत्रों की संख्या २०० और पाठकों की संख्या ३ करोड़ थी। १८९४ ई० में पत्रों की संख्या ८१४ हो गई। इसके ५ वर्ष बाद १००० हुई। साल (सन् १९१०) में अखबारों की संख्या दो हजार हो गई है। जापान देश के दस सहस्र मनुष्यों का कोई ऐसा निवास-स्थान नहीं होगा जहां से दो तीन दैनिक पत्र न निकलते हों। राजधानी टोकियो से प्रति दिन ५० गेजट निकलते हैं। उनमें जिजी निचि निचि, ककूमिन निपन, जिजिसिम्पो, प्यासाई, होचि, माईपाकि आदि कई एक पेपर जगत्प्रसिद्ध हैं।

ओशाका, कोब, योकोहामा और नगाया से कई एक बड़े बड़े दैनिक पत्र निकलते हैं। अंग्रेजी अखबारों में जापान गेजेट, जापान टाइम्स, मल हेरल्ड, कोब हेरल्ड, आदि पत्र विशेष उल्लेख योग्य हैं।

इनमें किसी किसी पत्र की ग्राहक संख्या एक लाख से भी अधिक है। जापान की मुद्रायन्त्र अति कठोर है। राज्य सम्बन्धी कोई अति गूढ़ रहस्य प्रगट कर देने पर सम्पादक को अवश्य जेल जाना पड़ता था। किन्तु अब तो जापान पार्लमिंट ने बहुत से हक प्रेस एक्ट सम्बन्धी जापान वासियों को दे दिये हैं, तो भी जापानी अखबार इतना निर्भय हो लेखनी चलाते हैं कि उनको एक उपसम्पादक को काम सौंप कर जेल जाने के लिये तय्यार ही रहना पड़ता है।



जापान साम्राज्य की गठन प्रणाली और राज्य-नीति।



समस्त जापान साम्राज्य ४५ केन अर्थात प्रदेशों में विभक्त है। प्रति प्रदेश में एक चो अर्थात शासनकर्त्ता निवास करता है। प्रति ग्राम में ही ग्रामवासिगण गठित विधि से निर्व्वाचित १२ प्रधान व्यक्तियों द्वारा एक समिति निर्माण की जाती है। प्रतिग्राम मेंही एक पुलीसमैन निवास करता है । सम्राटही राज्य के सर्व प्रधान अधीश्वर हैं। यह "नेकम्याक" अर्थात मंत्री सभा की सहायता और अनुमति से राज्य शासन किया करते हैं। कार्य्य यथोचित रीतिसे निर्वाह होने के लिये मंत्री सभा राजस्व, शिक्षा, सामरिक, वैदेशिक, उपनिवेश आदि नाना भागो में विभक्त है। प्रत्येक विभागमें एक 'दैजिन' (मंत्री) है।

सन् १८६० ई० में इंगलेन्ड के अनुकरण से जापान में पार्लामेन्ट अर्थात प्रतिनिधि शासन सभा स्थापित हुई। यह सभा अभिजात और साधारण सभा के नाम से दो भागों में विभक्त है। साधारण सभा के सभ्यों की क्षमता अधिक है, अर्थात साम्राज्य के यावत आय और व्यय के ऊपर इन

इनमें किसी किसी पत्र की ग्राहक संख्या एक लाख से भी अधिक है। जापान की मुद्रायन्त्र अति कठोर है। राज्य सम्बन्धी कोई अति गूढ़ रहस्य प्रगट कर देने पर सम्पादक को अवश्य जेल जाना पड़ता था। किन्तु अब तो जापान पार्लीमेंट ने बहुत से हक प्रेस एक्ट सम्बन्धी जापान वासियों को दे दिये हैं, तो भी जापानी अख़बार इतना निर्भय हो लेखनी चलाते हैं कि उनको एक उपसम्पादक को काम सौंप कर जेल जाने के लिये तय्यार ही रहना पड़ता है।



जापान साम्राज्य की गठन प्रणाली और राज्य-नीति।



मस्त जापान साम्राज्य ४५ केन अर्थात प्रदेशों में विभक्त है। प्रति प्रदेश में एक चो अर्थात शासनकर्त्ता निवास करता है। प्रति ग्राम में ही ग्रामवासिगण गठित विधि से, निर्वाचित १२ प्रधान व्यक्तियों द्वारा एक समिति निर्माण की जाती है। प्रतिग्राम मेंही एक पुलीसमैन निवास करता है। सम्राटही राज्य के सर्व प्रधान अधीश्वर हैं। वह "नैकस्याक" अर्थात मंत्री सभा की सहायता और अनुमति से राज्य शासन किया करते हैं। कार्य्य यथोचित रीतिसे निर्वाह होने के लिये मंत्री सभा राजस्व, शिक्षा, सामरिक, वैदेशिक, उपनिवेश आदि नाना भागों में विभक्त है। प्रत्येक विभागमें एक 'दैजिन' (मंत्री) है।

सन् १८६० ई० में इंगलेन्ड के अनुकरण से जापान में पार्लीमिन्ट अर्थात प्रतिनिधि शासन सभा स्थापित हुई। यह सभा अभिजात और साधारण सभा के नाम से दो भागों में विभक्त है। साधारण सभा के सभ्यों की क्षमता अधिक है, अर्थात साम्राज्य के यावत आय और व्यय के ऊपर इन्ह

इनमें किसी किसी पत्र की ग्राहक संख्या एक लाख से भी अधिक है। जापान की मुद्रायन्त्र अति कठोर है। राज्य सम्बन्धी कोई अति गूढ़ रहस्य प्रगट कर देने पर सम्पादक को अवश्य जेल जाना पड़ता था। किन्तु अब तो जापान पार्लीमेंट ने बहुत से हक प्रेस एक्ट सम्बन्धी जापान वासियों को दे दिये हैं, तो भी जापानी अखबार इतना निर्भय हो लेखनी चलाते हैं कि उनको एक उपसम्पादक को काम सौंप कर जेल जाने के लिये तय्यार ही रहना पड़ता है।



जापान साम्राज्य की गठन प्रणाली और राज्य-नीति।



समस्त जापान साम्राज्य ४५ केन अर्थात प्रदेशों में विभक्त है। प्रति प्रदेश में एक चो अर्थात शासनकर्त्ता निवास करता है। प्रति ग्राम में ही ग्रामवासिगण गठित विधि से निर्वाचित १२ प्रधान व्यक्तियों द्वारा एक समिति निर्माण की जाती है। प्रतिग्राम मेंही एक पुलीसमैन निवास करता है। सम्राटही राज्य के सर्व प्रधान अधीश्वर हैं। वह "नेकस्याक" अर्थात मंत्री सभा की सहायता और अनुमति से राज्य शासन किया करते हैं। कार्य्य यथोचित रीतिसे निर्वाह होने के लिये मंत्री सभा राजस्व, शिक्षा, सामरिक, वैदेशिक, उपनिवेश आदि नाना भागों में विभक्त है। प्रत्येक विभागमें एक 'देजिन' (मंत्री) है।

सन् १८९० ई० में इंगलेन्ड के अनुकरण से जापान में पार्लीमेन्ट अर्थात प्रतिनिधि शासन सभा स्थापित हुई। यह सभा अभिजात और साधारण सभा के नाम से दो भागों में विभक्त है। साधारण सभा के सभ्यों की क्षमता अधिक है। अर्थात साम्राज्य के यावत आय और व्यय के द्वार इन्

प्रबन्ध है। लांच रिसवत किस चिड़िया का नाम है यहां यह बात कोई जानताही नहीं।

जापान में १३६ जेलखाने हैं। प्रति कारागारही में एक एक जेल गवर्नर है। उसका वार्षिक वेतन नौ सौ से अढ़ाई हजार रुपया तक है। गत वर्ष सब जेल के कर्म्मचारियों की संख्या ११६६५ थी, और सब कारागारों के कैदियों की संख्या ६० हजार थी।

हरेक कैदी के स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। उन लोगों को ग्रीष्म-ऋतु में रोज, और शीतकाल में आठवें दिन स्नान करने का अवसर दिया जाता है। प्रति दिन ३ बार खुराक दीजाती है। कैदी लोग जेल से छूटने पर जिसमें सद उपाय से जीविका निर्वाह कर सकें उसके लिये जेल में रहते समयही वस्त्र बुनना, सूची कर्म, ईंट निर्माण करना, घड़ी-साजी, मोटर चलाना, बाइसिकेल सुधारना, आदि खूब अच्छी तरह से सिखला दिया जाता है। कैदी लोग जेल से बाहर होतेही स्वतन्त्र व्यवसाय कर सद उपाय से जिसमें परिवार पालन करें, उसके लिये विशेष ध्यान दिया जाता है। कैदियों के जेल से छूटने पर कुछ पूंजी उनको कर्ज के तौर पर दे दी जाती है, और चाल चलन पर कुछ दिनों तक ध्यान दिया जाता है।

जापान गवर्नमेन्ट के कोष में गत वर्ष एक वर्ष की आमदनी के ६४ करोड़ रुपये जमा हुए थे। आगामी वर्ष

का बजट ८० करोड़ के लगभग अनुमान किया गया है। जमीन का महसूल २॥) रु० सैकड़े के हिसाब से लिया जाता है। १८ करोड़ रुपया भूमि-कर का गत वर्ष वसूल हुआ था।

वार्षिक ४५०) से अधिक आय वालों को इनकम टेक्स देना पड़ता है, गत वर्ष इसमें ६ करोड़ एकत्रित हुआ था। शेष रुपया देशी और विदेशी मदिरा *, तम्माकू †, व्यौपार के महसूल में, और रेलवे-पोस्ट ऑफिस, वन विभाग, खानों के टेक्स, कस्टम स्टाम्प आदि की आमदनी में संगृहीत हुआ था। पहिले प्रति जापानी को ८३ पैंस वार्षिक कर देना पड़ता था। गत रूस जापान के महा युद्ध में अधिक खर्च पड़ जाने के कारण सरकार ने ३७ पैंस और अधिक बढ़ा दिया है। इस प्रकार नाना विषयों में राज-कर प्रजा को कुल ११० पैंस तक सालाना देना पड़ता है।

जापान सरकार को फौजी-खर्च के लिये प्रति वर्ष प्राय: छः करोड़ रुपया खर्च करना पड़ता है। साधारण शिक्षा विभाग में ७॥) रुपया सैकड़ा अर्थात प्राय एक करोड़

* साकि (मदिरा) जापान में ५ प्रकार की बनाई जाती है, यथा—१-यिशु (परथुनी), २-मिरिन (मिष्ट), ३-सिरोजोकी (श्वेतवर्ण), ४-मोचू (आलू से उत्पन्न होती है), और ५- डाकसू (अपरिष्कार)।

† तीन वर्ष पहिले तम्माकू का रोजगार अंग्रेज और अमेरिका वालों के हाथ में था। इस समय जापान सरकार ने ही यह लाभदायक व्यवसाय अपने हाथ मे ले लिया है।

प्रबन्ध है। लांच रिसवत किस चिड़िया का नाम है यहां यह बात कोई जानताही नहीं।

जापान में १३६ जेलखाने हैं। प्रति कारागारही में एक एक जेल गवर्नर है। उसका वार्षिक वेतन नौ सौ से अढ़ाई हजार रुपया तक है। गत वर्ष सब जेल के कर्म्मचारियों की संख्या ११६६५ थी, और सब कारागारों के कैदियों की संख्या ६० हजार थी।

हरेक कैदी के स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। उन लोगों को ग्रीष्म-ऋतु में रोज, और शीतकाल में आठवें दिन स्नान करने का अवसर दिया जाता है। प्रति दिन ३ बार खुराक दीजाती है। कैदी लोग जेल से छूटने पर जिसमें सद उपाय से जीविका निर्वाह कर सकें उसके लिये जेल में रहते समयही वस्त्र बुनना, सूची कर्म, ईंट निर्माण करना, घड़ी-साजी, मोटर चलाना, बाइसिकेल सुधारना, आदि खूब अच्छी तरह से सिखला दिया जाता है। कैदी लोग जेल से बाहर होतेही स्वतन्त्र व्यवसाय कर सद उपाय से जिसमें परिवार पालन करें, उसके लिये विशेष ध्यान दिया जाता है। कैदियों के जेल से छूटने पर कुछ पूंजी उनको कर्ज के तौर पर दे दी जाती है, और चाल चलन पर कुछ दिनों तक ध्यान दिया जाता है।

जापान गवर्नमेन्ट के कोष में गत वर्ष एक वर्ष की आमदनी के ६४ करोड़ रुपये जमा हुए थे। आगामी वर्ष

वाणिज्य ।



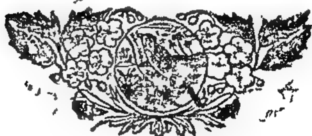
रजेण्टाइन, आस्ट्रिया, बेलजियम, कासिका, डेनमार्क, फ्रांस, जर्मनी, ग्रेटब्रिटन, इटेली, मेक्सीको, नेदरलेण्ड, पेरू, रूस, रोम, स्याम, स्पेन, सुईडेन, स्वीटजरलेण्ड, युनाइटेड स्टेटस, एमेरिका आदि वैदेशिक गवर्नमेण्टों के साथ



जापान का वाणिज्य सम्बन्ध है। जापान से जो द्रव्यादि विदेश में भेजी जाती है उनमें चाय, चावल, कर्पूर, कर्पूर का तेल, तम्बाखू, मछली, दियासलाई, बिछौना, मोम, रेशम, रेशमी वस्त्र, पशम, सूत, वार्निश, ताम्बा, कोयला आदि सर्व प्रधान है। चावल प्रधान उत्पन्न द्रव्य होने पर भी सम्राट के विशेष आज्ञा विना विदेश नहीं भेजा जा सकता है। इस कारण जापान में कभी दुर्भिक्ष नहीं पड़ता है। सन् १९१० ई० में साढ़े अस्सी करोड़ का व्योपारी द्रव्यादि विदेश भेजा गया था। ... में ७० करोड़ का माल विदेश ... हुआ था।

और ... में जापानियों ने पृथ्वी ... ति के ... श्रेष्ठ अधिकार ... । ... गार का मैन- ... है।

रुपया जापानी सरकार का खर्च होता है। वाणिज्य
कृषि के उन्नति के लिये प्रायः डेढ़ करोड़ रुपया वा
व्यय होता है। जापान गवर्नमेन्ट जिस स्थान में ि
व्यय निर्वाहार्थ व्यक्ति प्रति ~)॥ आना सालाना खर्च क
है, भारत गवर्नमेन्ट शिक्षा विभाग में अढ़ाई पैसा फी आ
के हिसाब से वार्षिक व्यय करने में भी आनाकानी क
है। जापानी लोगों की आर्थिक अवस्था भारत वा
के समान शोचनीय नहीं है। जापान के प्रत्येक आदम
की मोटे हिसाब से ८०) रुपया से अधिक आमदानी है
उन लोगों को सर्व प्रकार के सरकारी करों में कुल ८
साल से अधिक नहीं देना पड़ता है।



वाणिज्य ।





अरजेण्टाइन, अस्ट्रिया, बेलजियम, कासिका, डेनमार्क, फ्रांस, जर्मनी, ग्रेट ब्रिटन, इटैली, मेकसीको, नेदरलेण्ड, पेरू, रूस, रोम, स्याम, स्पेन, सुईडेन, स्वीटजरलेण्ड, युनाइटेड स्टेटस, अमेरिका आदि वैदेशिक गवर्नमेण्टों के साथ जापान का वाणिज्य सम्बन्ध है। जापान से जो द्रव्यादि विदेश में भेजी जाती है उनमें चाय, चावल, कर्पूर, कर्पूर का तैल, तम्बाखू, मछली, दियासलाई, खिलौना, मोम, रेशम, रेशमी वस्त्र, पशम, सूत, वार्निश, ताम्बा, कोयला आदि सर्व प्रधान है। चावल प्रधान उत्पन्न द्रव्य होने पर भी सम्राट के विशेष आज्ञा बिना विदेश नहीं भेजा जा सकता है। इस कारण जापान में कभी दुर्भिक्ष नहीं पड़ता है। सन् १९१० ई० में साढ़े अस्सी करोड़ का व्योपारी द्रव्यादि विदेश भेजा गया था। इसके पूर्व वर्ष में ७० करोड़ का माल विदेश प्रेरित हुआ था।

सूत और रेशमी वस्त्रादि बुनने में जापानियों ने पृथ्वी के अन्य जाति के मनुष्यों की अपेक्षा सब से श्रेष्ठ अधिकार प्राप्त किया है। ओसाका बन्दर प्रशान्त महासागर का मैनचेष्टर बन गया है।

ह्वाइट द्वीप में कोयला, किरोसिन तैल, और सोने चांदी, की बड़ी २ खानें हैं। जापान का ताम्बा जगत विख्यात है। इस समय कुल जापान देश में १०० चांदी, २०० ताम्बे तथा अन्य मिश्रित धातुओं की खाने हैं। इन सब खानों से गत वर्ष २० लाख मन ताम्बा, ६२ हजार मन सोना, डेढ लाख मन चांदी, ३५ करोड़ मन कोयला निकाला गया था।

गत वर्ष जापान में जो नवीन स्वर्ण-खानि तलाशी गई है उसका मूल्य अनुमान ५०० करोड़ रुपया युरोपियन व्यवसायी पण्डितों ने कूता है। जापान सभ्यता के उच्च सोपान में चढ़ने पर भी देशी वाणिज्य के उन्नति के सम्बन्ध में अणुमात्र भी उदासीन नहीं हुआ है। भाफ-यंत्र के प्रबल प्रतियोगिता न कर सकने पर भी जापान के हरेक छोटे २ ग्रामों में पुरानी चाल के चरखाओंही से सूत कातने और तांत के द्वारा वस्त्र बुनने का कार्य्य अधिक होता है।

जापान देश के गृह २ में हस्त जात छूरी, कैंची, मृत्तिका निर्मित वासन और बांस की बनी हुई नाना विधि गृह सामग्री देखने में आती है।

जापान देश के कारीगर कागज के दरवाजा, खिड़की, कोट, कमीज, आदि नाना प्रकार की व्यवहारिक वस्तुएं बना कर बेंचा करते हैं। बांस के बिछौने, बाकस, बेग आदि प्रस्तुत विषय में असामान्य निपुणता प्रदर्शन करते हैं।

जापान निवासी केवलमात्र समर शास्त्र पारदर्शी होकर

ही युरोपीय जातियों के समकक्ष हुए हैं, यही नहीं, किन्तु वे लोग कृषि, शिल्प और वाणिज्यादि विषय में भी असाधारण उन्नति लाभ कर युरोपीय जातियों को विस्मित कर दिया है। गत महायुद्ध में फसे रहने के समय भी जापानी किसान लोग उस वर्ष भूमि से २८ करोड़ मन चावल, १२ करोड़ मन जव और ८ करोड़ मन विविध तरकारी उत्पन्न किया था। सरकारी गणनानुसार गत वर्ष जापान में २३ लाख मन नील पत्र, १८ लाख मन तम्बाकू और पौने सात लाख मन उत्तम चाय उत्पन्न हुई थी।

राजधानी टोकियो शहर में कागज के दो प्रकाण्ड कारखाने हैं। यहा "मितसुमतो कोजो" और "गाम्पी" नामक वृक्ष से कागज प्रस्तुत होता है। लकड़ी का कागज बनाया जाता है और कागज के गृह निर्मित होते हैं, कहीं वस्त्र प्रस्तुत होते हैं, रेल के डिब्बे बनाये जाते हैं। जल की नौकाएं, चाय पीने के पियाले आदि एक से एक बढ़कर महोपकारी वस्तुएं तैयार हुआ करती हैं।

जापान में मछली का व्यापार बहुतही अधिक होता है। १३ लाख घर मछली पकड़ने वाले मछुओं के हैं, उनमें ८० लाख स्त्री पुरुष, बालक-बालिका समस्त जापान में जल जीव पकड़ने की जीविका करते हैं। यह लोग क्षुद्र और वृहत् जाल, रंसी, और बांस निर्मित यन्त्रादि की सहायता से जापान, कोरिया, साइबिरिया के समुद्रों में विविध प्रकार के जल जन्तुओं को पकड़ा करते हैं।

गत पांच वर्ष पहिले समग्र जापान में साढे छ लाख नौकायें और १२ लाख नाना प्रकार के जाल थे। जापान सरकार की सर्वापेक्षा वृहत् नौका का नाम "साईवासि" है यह लम्बाई में ५० फीट और चौड़ाई में २० फीट है।

गम, चीनी, गज-दन्त, स्वर्ण, लौह, कांच, चमड़ा, औषधि, पुस्तक, मानचित्र, विविध प्रकार के रङ्ग तेल, आदि विदेशों से आते हैं।

इन सब वस्तुओं में चीन का गम, और कोरिया का सुवर्ण अधिक प्रसिद्ध है। गत वर्ष की आमदनी का मूल्य ध्रू करोड़ रुपया स्थिर हुआ था। जापान के डाक, रेल, टेलीग्राफ, कपड़े की कलें, सूत की कल, मुद्रा-यंत्र, आदि बहुत से कल कारखाने देश में, देश के मूल-धन से देशी लोगों के ही द्वारा परिचालित हो रहे हैं। सामान्य सूई से लेकर विशाल युद्ध-जहाज तक सब जापान में ही प्रस्तुत होता है। इस समय जापान में विविध श्रेणी के १० हजार कल कारखाने विद्यमान है। इन सबों में ४ हजार बिजली और भाफ के बल से चलते हैं। शेष सब हस्त कौशल द्वारा अपना कार्य्य कर रहे हैं।

इन सब कारखानों का मूल-धन ८९८, २८७ रुपये से अधिक है। इस समय जापान में ६० सूत की कलों में ३० लाख चरखे चला करते हैं। सब कारखानों में ५ लाख से अधिक श्रमजीवी मनुष्य जाति कार्य्य कर अपना उदर निर्वाह करते हैं।

क्रमश वाणिज्य उन्नति के साथ एक ओर जिस प्रकार देश की धन वृद्धि होरही है, दूसरी ओर उसी प्रकार जीवन संग्राम की कठोरता की भी वृद्धि होरही है। आज कल दैनिक मजदूरों का भाव जापान में अत्यन्तही अधिक बढ़ गया है। जो जापानी सौदागर पृथ्वी के नाना प्रान्तों में व्यवसाय वाणिज्य करते हैं उनमें फूाकसामा, आमाजसाकि, लिटस, निपन, गोडा, कानाकिम, और ओसाका नामक कम्पनियां जगत प्रसिद्ध हैं। इनमें प्रत्येक की वार्षिक आमदनी डेढ़ करोड़ रुपये से भी अधिक है।

वाणिज्य की सुविधा के लिये जापान साम्राज्य में ३३१७ जिनको, अर्थात् वैंक हैं। इन सब वैंकों में जापान वंक (Japan's Bank) सब प्रधान हैं। इस वैंक की पूंजी कुल ५० करोड़ से भी अधिक होगी। इसके सिवा एक हजार साधारण, ५ शपि, और बहुत सी सरविस वंकें (Service Bank) हैं।



जापान गवर्नमेन्ट इस समय जो सैनिक-विभाग के सम्बन्ध में व्यवस्था की है उससे भविष्य में १० लाख फौज लड़ाई के लिये एक दिन में भेजी जा सकती है। जापानी सरकार ने मंचूरिया और कोरिया की फौज की संख्या भी भरपूर बढ़ा दी है। गत मास के पार्लमेन्ट महासभा में सैन्य-सचिव ने स्पष्ट ही कहा था, कि जापानी लोगों को हम इस प्रकार रणकुशल बना देंगे कि बड़े २ साम्राज्य भी जापानियों से प्रतियोगिता करने की हिम्मत न कर सकेंगे। अवश्य ही युरोपियन लोगों को जापान की यह आशातीत उन्नति कांटे के समान गड़ती है, चाहे ऊपर से कितनी ही मित्रता क्यों न प्रगट करें।

युद्ध के लिये यहां पर इतनी जबरदस्त फौज तैयार रहने पर भी सरकार का ६ करोड़ से अधिक वार्षिक रुपया व्यय नहीं होता है। जापान के प्रति पदातिक और अश्वारोहा सिपाही का ४५) और ६०) से अधिक वार्षिक वेतन नहीं है। कर्नल, कप्तान, प्रभृति सेना संचालकों का वेतन १५०) से २००) वार्षिक तक है। प्रधान सेनापति का वेतन ५००) वार्षिक से अधिक नहीं है।

फौज में रहने वाले कुली मजदूर और खिदमतगारों का वेतन खुराक और दो आना रोज है। युद्ध क्षेत्र में फौज को दिन में तीन बार भोजन दिया जाता है। प्रात काल चाय, बिसकुट, मछली का सुरुआ और रोटी, मध्यान्हकाल

भात, सूखी मछली और सायंकाल चाय, वार्ली, पावरोटी, दूध, मक्खन और शराब। डाक्टरों के आदेशानुसार इसमें कभी कभी उलट फेर भी हो जाया करता है।

नौबल।

जापान-वासियों ने गत तीस वर्ष के अन्दर जल युद्ध विषय में भी असामान्य उन्नति किया है। जापानियों ने यह महा मन्त्र भी रख लिया है कि, द्वीप वासियों की प्रबल नौबल के सिवा दूसरे प्रकार से आत्म रक्षा देश रक्षा होना असम्भवित है। अंगरेज नौ सेनापति फिटजिराल्ड ने भी स्पष्ट स्वरों में नीचे लिखी हुई बातें कही हैं—

जापानियों ने स्वीय प्रतिभा प्रताप से किसी किसी विषय में अंगरेजी नौ युद्ध से भी अधिक उन्नति प्राप्त की है।

नीचे जापान के वर्त्तमान सामुद्रिक बलका कुछ थोड़ा सा विवरण जो हमको मालूम हो सका है, सूची देते हैं,—

युद्ध जहाज।

	नाम	कितने टन	अश्व शक्ति	वेग	तोप
१	मिकासो	१५३५०	१६२०३	१८ मिल	५० क
२	सिकिशामा	१५०८८	१८७००	१८ ,,	५
३	टयपासाही	१५४४९	१५०२६	१८ ,,	५०
४	फ्यूजि	१२३२०	१६०००	१८ ,,	३८
५	हिजेन	१२०००	१६०००	१७ ,,	ग
६	ईकी	९६७२	८०००	१६ ,,	

७	एफाई		..	.	य
८	सात-ज़ुमा	१६२०		.	क
९	इयासिमा	९८५५	१८२४९	१८ ,,	३८ ख
१०	आइयोयामि	१३६००	१६०००		
११	चीन रयेन	७७३५	६२००	१८ ,,	१८- छ
१२	टोगो	१०३६०	११२५५		ज
१३	कातोरी	१५६८०	१६०००	१८	५०
१४	तुओ	१२६७८	१४५००	.	झ

लौह मण्डित प्रथम श्रेणी की रण-तरणियां।

	नाम	टन	शक्ति	
१	टोकियो	६८५५	१८२४५	
२	आदज़ुमा	३८६५	१६०००	
३	आशो	७७३५	२७४००	
४	फयासुगा	७६२८	१३५००	ट
५	निशिन	७६२८	९४००	ठ
६	इकोमा	९०००	१५५००	ड
७	आईओपेत	९९०६	१८७००	ढ

लौह माण्डित रक्षित रण-तरणियां।

१	एकागी	२	एकसि
३	एकी सुसीमा	४-	चिह्नाज
५	हासिडेत	६	आज़ुमा

७ एकिनो सीमा (रूस से युद्ध में छीना गया है)

--मनानिओयो

९ तेकासेगो	१०	कासागी
११ मात सुसिमा	१२	सुंगारू
	(रूस से छीना गया है)	
१३ सूमा	१४	इन सुमीमा
१५ तकिचिओ	१६	नितेका
१७ इडजुमा	१८	अकोशी
१९ टोकियो	२०	इयेयामा
२१ सेप रूस का बेएड	२२	आतेया

इसके सिवा तोपों से भरे हुए तथा उपकूलों में रक्षार्थ और भी ३० जहाज़ हैं। टारपेडो ७८ और टारपेडो नाशक जल जहाज ५१ हैं।

उपर्युक्त महाशक्तिशाली जहाजों के सिवा और भी ५५०० वाणिज्य पोत हैं इनमें १४००० बिजली द्वारा तथा शेष दूसरी कलों से चलते हैं।

यह जलयान भी नीचे ऊपर मजबूत लोहे और ताम्बे से मंडित हैं इस कारण युद्ध कार्य्य में भी आवश्यक पड़ने पर काम दे सकते हैं।

१८६७ ई० में सिर्फ ८ जहाज थे १८८२ में २० हुए। सन् १८९३ ई० में संख्या बढ़ते बढ़ते ३२ हुई। गत पांच वर्ष हुए तब जहाज संख्या ५८ और तोप २१५६ हुई थीं। ऊपरका हिसाब जो मैंने दिया है सो सन् १९०६ ई० का है। जापानी गवर्नमेन्ट गजट में जो हिसाब छपा था, उसका

संक्षेप अनुवाद है। मैंने यहां के और भी सम्वाद पत्रों से मिलान किया तो ठीक ऐसाही हिसाब पाया।

जापानी जहाज विभाग के एडमिरल, वाइस एडमिरल, रियर एडमिरल, कमान्डर, कप्तान, लफटिनएट, चीफ गनर और वाटस आयन उपाधिधारी कर्म्मचारी हैं।

क। लड़ाई में अग्नि लगने से जल गया था किन्तु अब मरम्मत हो गई है।

ग। रूसी नाम निकोलस था।

घ। अभी बनकर तैयार हुआ है।

ङ। पृथिवी के सब जहाजों से बड़ा है।

छ। चीन में मिला।

ज। रूसी नाम पालटोभा था।

झ। रूसी नाम पोविडा था।

ट। यह इगलैण्ड में बना है।

ठ। चिली देश से खरीदा गया है।

ड। अभी बना है।

ढ। इनके सिवा कुकुमा सुकूकु नामकी नवीन ढग की रणतरणी अभी बनकर तैयार हुई है।

प्रथम तीन श्रेणी के नौ सेना पतियों को वर्ष में यथाक्रम नौ हजार छ हजार और पाच हजार रुपया वेतन मिलता है। उससे निम्न अफसरोंका वेतन यथाक्रम २५९०) १८००) और १५००) वार्षिक नियत है।

जापान की नाना कथाएं।

(मुद्रा-विभाग)



स रिन का एक छेन।

१०८ छेन का एक इयेन।

इयेन चांदी का शिक्का है यह अंग्रेजी २ सिलेंग के बराबर का होता है हमारे देश के २॥) रु० के बराबर हुआ।

छेन—ताम्र मुद्रा है यह हमारे देश के एक पैसे के बराबर कीमत में चलता है। रिन—दो दमड़ी के कीमत का होता है।

वजन-प्रणाली।

१० किन का १ कोयान।

१७ कोयान का १ पाइकल।

४-पाइकल का १ कोकू।

एक किन हमारे देश के प्राय. आध सेर के बराबर होता है।

जमीन नापने की रीति।

६-माकू का १ केन।

६० केन का १ चो।

३६ चो की १ राई।

अंग्रेजी १९४ फिट का एक माकू होता है । १ चो प्रायः ३५ हाथ के बराबर का होता है एक राई अंग्रेजी दो मील के कुछ ऊपर अर्थात् हमारे एक कोस से कुछ कम की होती है ।

डाक—विभाग ।

सन् १८७१ ई० के मार्च मास से जापान में युरोप की प्रथानुसार डाक घर स्थापित हुए। और इसी वर्ष पोस्ट के (आईन) कानून तथा टिकट छापे गये १८७५ ई० में सेविङ्गबेंक की प्रथा प्रचलित की गई । १८८५ ई० में (Reply) जवाबी पोस्टकार्ड चलाया गया, इस समय जापान में एक जेनरेल पोस्टआफिस ६ हजार भिन्न २ श्रेणी के डाक घर और दो हजार टेलीग्राफ आफिस हैं ।

गत वर्ष डाक-विभाग के उच्च कर्मचारियों की संख्या ४ सौ, मध्य कर्मचारियों की २० हजार और निम्न कार्य करताओं की संख्या ७० हजार थी। गत वर्ष समस्त जापान में ४० करोड़ पोस्ट-कार्ड, १८ करोड़ लिफाफे बिके थे। डाक विभाग से जितनी आमदनी होती है। सैकड़ा पीछे १५) रु० के हिसाब से इसी विभाग की उन्नति के लिये वार्षिक व्यय कर दी जाती है ।

जापान में आधे आउन्स-वजन के पत्र और अढ़ाई आउन्स वजन सम्वाद पत्र का यथाक्रम से ३ छेन और ६ छेन महसूल लगता है। पोस्टकार्ड और जवाबी कार्ड की कीमत

॥। छेन और ३ छेन है। बुक पैकट का नमूना डाक के प्रत्येक ३॥ आउन्स का २ छेन महसूल देना पड़ता है। रजिस्टरी चिट्ठी एक आउन्स तक ७ छेन में जाती है। पत्रादि वरिङ्ग होने पर दूना महसूल देना पड़ता है। जापान में १० इयेन का मनीआर्डर भेजने पर ६ छेन कमीसन देना पड़ता है। तार द्वारा खबर भेजने से १५ शब्दों तक का २० छेन लगता है।

जापान का रेल-पथ।

जापान में सब से पहिले रेल-पथ सन् १८७२ ई० के १२ अप्रैल को खुली १८७७ ई०में ६५ मील मार्ग प्रस्तुत हुआ। देश की उन्नति के साथही साथ रेल-पथ भी बढ़ता गया। वर्तमान समय में ७ हजार मील तक रेल पटरी बिछी हुई है। पहिले जापान गवर्नमेण्ट को खास दो बड़ी २ लाइनें थीं और कम्पनियों की ४१ रेलवे लाइनें अलग थीं, परन्तु अब सरकार ने सब अपने अधिकार में कर लिया है। जापान में प्रथम-द्वितीय और तृतीय श्रेणी की गाड़िया हैं। भाड़ा का (रेट) दर यथाक्रम से चौगुना, दुगुना और मामूली है। बारह वर्ष से कम उमर वाले बालकों का आधा किराया लगता है। चार वर्ष तक के बालकों का कुछ भी महसूल नहीं लिया जाता।

(Return ticket)दोनों तरफ का टिकट पूरे भाड़े से चौथाई का दाम लेकर देदिया जाता है। पहिले दरजे का टिकट खरी-

दने वाले १०० किन, दूसरे दरजे वाले ६० किन और तृतीय श्रेणी के यात्री ३० किन, तक का वजन विना महसूल दिये ले जा सकते हैं। मुसाफिरों को अपनी साइकेल किराया भी कुछ नहीं देना पड़ता है। जापानी रेलवे ट्रेनों में (first) प्रथम और (second) द्वितीय क्लास के यात्रियों को साथ (बगल के कमरों) में एक २ नौका भी तीसरे दरजे का भाड़ा देकर ले जाने की इजाजत है।

जापान-देश पृथ्वी का नन्दन कानन, के नाम से जगत् में विख्यात हैं। इसी लिये प्राचीन आर्य्य लोगों ने इस द्वीप का नाम सुदर्शन रक्खा था। जीवन सार्थक और नयन परितृप्त करने के लिये ईश्वर ने अनेक अपूर्व दृश्य इहा सुशोभित कर रक्खा है। याकोहाम—बन्दर हाकोन—पर्वत की उत्तम कोल, फूजिसामा शृंग, सीता पर्वत का रेल-पथ, तेनारू-नदी के लोहे का पुल, हामानाहृद, नागोवा के स्वर्ण भवन, इयारो का जल प्रपात। और ऊंचे २ उत्तम पर्वत, कियातो के बांसों के कुज, मीनोतो गोया आदि के तीर्थ स्थान, जापान जाने वालों के लिये विशेष आनन्दप्रद दर्शनीय, तथा रमणीक है।

कलकत्ते से प्रति सप्ताह ओपकार, कम्पनी का, और Indo china & Co का डाक जहाज हाग कांग द्वीप में जाता है हाग कांग से प्रसान्त महासागर के मेलसिप में यात्रा करने से बड़ा सुभीता रहता है।

कलकत्ते से हांग कांग के प्रथम श्रेणी का किराया २५०) द्वितीय श्रेणी का २००) और डेक का भाड़ा ४५) रुपया लगता है। हांग कांग से इयाकाहामा का १ दरजे का २२७।~) जहाज के सन्मुख कमरे का ६८) रु० और डेक का किराया ३५) रुपया पड़ता है। न० ६ ओलडकोर्टहाउस स्ट्रीट कलकत्ता के टामस एण्ड सन्स के कार्य्यालय में टिकट आदि बिकते हैं। तथा आवश्यकीय ज्ञातव्य विषय भी इस कम्पनी द्वारा मालूम होजाते हैं।

बम्बई बन्दर और हांग कांग से पैसाफिक मेल जापान को सीधा जाता है। मदरास में एक स्वदेशी जहाजी कम्पनी खुली है। जो सीधे मदरास से जापान को पहुंचा देती है। सुनते हैं इस कम्पनी ने किराये का रेट बहुतही कम रक्खा है।

जापानियों ने जिस प्रणाली को अवलम्बन कर शारीरिक बल वीर्य बढाया है उस व्यायाम का नाम (yuyutsu) 'युयुत्सू' है हिन्दी भाषा में "पेशीविग्रह" करना होता है किन्तु इसके द्वारा सब देह की 'पेशी' विनष्ट न होकर, अत्यन्त बलिष्ट होजाती है। अत्यन्त दुर्बल तथा निर्बल मनुष्य भी नियम पूर्वक इस व्यायाम के करने से हृष्टपुष्ट और ताकतवर होजाता है। जापान के सैनिक और जहाजी लोगों को भी इसी व्यायाम का अभ्यास करना पड़ता है। इस व्यायाम में सब से पहिले आहार-उत्तम २ पुष्टकर वस्तुओं का करना पड़ता है। पीछे फेफड़ा और हृदय ~ की उन्नति साधन करनी

पड़ती है। सीखने वालों को अस्त्र-विद्या और प्राणी-विद्या की आलोचना करनी पड़ती है। और योगियों के समान नियम से रह शुद्धाचारी बनना पड़ता है। ४ वर्ष विशेष धैर्य के साथ अभ्यास करने से यह अपूर्व-विद्या आजाती है और देह पत्थर के समान पुष्ट होकर, उसमें ताक़त आजाती है।

जापान से सीख कर युरोप के नाना प्रान्तों में इस व्यायाम की शालाएं खोली गई हैं। भारत में भी दो चार जगह यह व्यायाम नियम पूर्वक सिखलाया जाता है।

जापान में 'हाराकिरी' अर्थात् आत्महत्या का प्रबल प्रचार है। जापानी लोग अतिसामान्य कारणसेही अपना अमूल्य जीवन विनष्ट कर डालते हैं। इन लोगों का विश्वास है कि आत्महत्या करने से इस लोक में यश तथा परलोक में स्वर्ग प्राप्त होता है। जापानियों के प्राचीन धर्म शास्त्र में लिखा है कि मनुष्य जाति मात्र को आत्म जीवन रक्षा और विनाश करने का अधिकार है।

वर्तमान राजकीय—आईन में यह घोर अपराध माना गया है। इससे ऐसे घृणित कार्य्य की चेष्टा करते हुए किसी जापानी के पकड़े जाने पर उसे जेल जाना पड़ता है।

जापान की 'शिमोज' नामक बारूद जगत विख्यात है। प्रोफेसर 'शिमोज' इसे दीर्घकाल व्यापी परिश्रम और परीक्षा के बाद आविष्कार किया है और अपने नामही के अनुसार बारूद का भी नाम रख लिया है।

इस प्रकार असाधारण विषफोटक शक्ति सम्पन्न बारूद पृथ्वी के ओर किसी वैज्ञानिक द्वारा आज तक न आविष्कार होसका।

जापानी-अध्यापक 'ओमोरि' ने भूकम्प की गति विधि और स्थिति परिमाणक जो यन्त्र प्रस्तुत किया है वह पश्चात्य पण्डित 'मिलनी' के यन्त्र की अपेक्षा विशेष कार्य्य कर और सस्ता है। इस समय इस यन्त्र की सहायता से शिमला शैल से १००० मील दूरवर्त्ती स्थान के भूमि-कम्प का वृतांत बहुत सहज रीति से पहिलेही मालूम होजाता है।

२९ जून १८९८ ई० को जापानी प्रोफेसर "कितो सातो" हांग काग द्वीप में पहुंच प्लग के कीड़ों की जांच की। वर्त्तमान में आपके ही विचारानुसार संसार में, विशेष कर भारत में, प्लग की औषधि और व्यवस्था आदि की जाती है।

चिकित्सा शास्त्र में जापानियों ने अनेक प्रकार से उन्नति साधन किया है। डाक्टर "शिगो" ने आमाशय रोग के कीड़ों को निकाल पाश्चात्य जगत के बड़े २ चिकित्सकों को आश्चर्य में डाल दिया है। जापानी डाक्टर शिगो—आमाशय रोग के रोगी के खून से इन कीड़ों को निकाल कर शीघ्र उसको निरोग कर देते हैं और एक जापानी चिकित्सक ने पशु-पक्षी आदि जीवों के देह से एक प्रकार का रस प्रस्तुत किया है जिसे कि मरते हुए मनुष्यों के देह में तनिकसा पहुंचा देने से कुछ काल के लिये वह मरणापन्न रोगी होश में आ, बातें करने लगता है कभी २ जी भी जाता है।

गोइसा—जापान की नृत्य कारणी रमणियों की एक जाति है। इन अपसरा विनिंदित सुन्दरी युवतियों का नृत्य—गान अवलोकन करने के लिये जापानी लोगों की विशेष रुचि रहती है। बालाओं की मनोहर मुख शोभा विचित्र-वेश विन्यास और अङ्ग की सुघराई अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि, मानों जगदीश्वर ने पुरुष जाति के चक्षुओं को तृप्त करने ही के लिये "गोइसा" कामिनियों को स्वर्ग से मृत्यु लोक में प्रेरित किया है। किन्तु गोइसा-सुन्दरियों का चारित्र दूषित नहीं होता। ये रमणियां पिता माता भ्राता आदि अभि भावकों के आधीन रह नृत्य-गीतादि का व्यापार करती हैं। विवाह होजाने पर फिर कभी इस पेशे को नहीं कर सकती हैं।

जापानी लोगों से भद्रता और नम्रता सब संसार को सीखना चाहिये। यह लोग बात २ में धन्यवाद और नम्रता स्वीकार करते जाते हैं। गुरुजनों को हमारे देश की तरह सिर नवाकर रोज प्रणाम करते हैं। आपस में गाली गलौज या मार पीट करना जापान में बड़े दोष का काम समझा जाता है। चमड़े का जूता पहिन घर के भीतर जाना मना है इससे कपड़े का जूता पहिन घर में विचरण करते हैं। जापानी भाषा में कुत्सित गाली गलौज देने के लिये वैसे शब्दही सायद नहीं है। विशेष गुस्सा होने पर "पागल" कह कर ये लोग अपना कोप प्रगट करते हैं।

जापान के 'सात ज्ञुमा' अर्थात् मल्ल उपाधि धारी एक

प्रसिद्ध यश है। यह लोग कुस्तीबाज पाहलवान के सिवा अन्य किसी को अपनी कन्या का विवाह करना महा अनुचित कार्य्य समझते हैं। अपनी जाति में कन्या या पुत्र होने पर एक वृक्ष उसी दिन लगा देते हैं। उस बालक बालिका के युवा होने पर जब उसका विवाह होता है तब उसी वृक्ष के पत्तों से मुकुट बना कर उसके सिर में बांधते हैं।

जापान के समान वैद्य पृथ्वी के और किसी देश में नहीं होंगे। जापानी भाषा में प्राचीन रीति के अनुसार वैद्यकी का पेशा करनेवालों को "कुइसा" कहते हैं। इन लोगों की दवा सस्ती, किन्तु अति उपकारी होती है। मृग नाभि से यह लोग नाना प्रकार की महौषधियां तैयार किया करते हैं।

जापान में जो किस्से कहानियां प्रचलित हैं उनमें से कईएकों का मिलान इस देश की कथाओं से होजाता है। यथा देव परियों की कहानी, हातमताई के समान वीर पुरुषों की अदभुत कार्य्यावली, देव दानव मनुष्य और परियों का विवाह, व्याघ्र शृगाल आदि का मनुष्य रूपधारन करना। लोमड़ी जापान देश में विचित्र शक्तिशाली जानवर समझी गई है। उसके विचित्र भयानक कार्यों की कथाएं प्रसिद्ध हैं। कुत्तों के भी सम्बन्ध में अनेक कहानिया इस देश में प्रसिद्ध हैं।

किन्तु जापान का युरोपीयभावापन्न सिक्षित समाज पुरानी बातों को ढकोसला समझ उसपर बिलकुल ही ध्यान नहीं देता।

पहली जून सन् १८९६ ई० को जापान गवर्नमेन्ट ने युद्ध के क्षतिपूर्ण स्वरूप चीन से "फारमोशा" तावान और उसके निकट के छोटे २७६ द्वीप पुञ्जों को ग्रहण किया था। इसके पहिले इन द्वीपों की अवस्था विशेष सोचनीय थी, किन्तु जापान के सुशासन प्रताप से अब यह एक महातिजारती क्षेत्र हो गया है। वर्त्तमान साल में इस द्वीप की मनुष्य संख्या ४० लाख से भी अधिक थी।

यहां के "तैहोकु कागी, हामा" आदि प्रधान नगरों में बहुत से स्कूल कालेज डाक्टर-खाने और बंक आदि स्थापित हो गये हैं। इस द्वीप में रेल पथ ६ हैं और ट्रेन गाड़ियां भी यहां कई जगह चलती हैं। टेलिग्राफ की लम्बाई ३ हजार मील से भी अधिक है। समग्र द्वीप में २०० डाक घर हैं। इस द्वीप से बहुत सी अफीम, निमक, कर्पूर, चीनी, चावल कांच, कागज और कोयला आदि पृथ्वी के नाना स्थानों में भेजा जाता है। इनमें पहिले की ३ वस्तुओं का व्यापार सिर्फ सरकारी की ओर से होता है। इस द्वीप में भी जापान के समान बिना डाक्टर की अनुमति के कोई अफीम का सेवन नहीं कर सकता है।

कई वर्ष हुए जापान गवर्नमेन्ट ने फ्रांसीसियों से

आलास्का द्वीप के निकट की सेन्टपीरी और दूसरे कई एक छोटे २ द्वीपों का खरीद किया है इससे अमेरिका में जापान का प्रथम अधिकार स्थापित हुआ है।

कुछ ही महीने हुए जापान ने कोरिया देश को पूर्ण रीति से अपने अधिकार में कर लिया है। यह कौतुक देख युरोप अमेरिका कुछ न कह, मन मसोस कर चुप रह गये। और कोरिया जापान द्वारा साशित हो रहा है।

जापान में निवास करने के व्यय-आदि।

जापान के किसी भले आदमी के घर में हिन्दुस्थानी मनुष्य खर्च आदि देकर बहुत दिनों तक निवास कर सकता है। और कम से कम २५) रु० मासिक तक में गुजारा हो सकता है। अमीरी ढंग से रहने में ५०) ६०) मासिक पड़ता है। जापानी भाषा विदेशियों के लिये पढ़ना महा कठिन है, किन्तु भारतवासी परिश्रम कर पढ़ें तो ८ आठ महीने में बखूबी आ जाती है। लाहौर दयानन्द एङ्गलो वैदिक कॉलेज और कलकत्ता अलवर्ट कालेज में जापानी भाषा पढ़ाई जाती है।

आनन्द का विषय है कि आर्यावर्त्त से गये हुए आर्य लोगों से जापानी सादर भाव से मिलते हैं। और सर्वदा पढ़ने लिखने तथा अन्य कार्यों में सर्व प्रकार की यथा सामर्थ सहायता प्रदान किया करते हैं।

रूस-जापान का युद्ध

इतिहास-(संक्षेप से)



न का वाकसर विद्रोह शान्त होनेपर मार्किन, जापान और युरोप के अन्य शक्ति शाली राष्ट्रों ने एकत्रित हो स्वीकार किया कि हम लोग अपने क्षतिपूर्ण स्वरूप चीनी सरकार से एक लक्ष रुपया लेंगे। और चीनी राजसत्ता में कुछ दखल नहीं देंगे। और सम्मिलित सैन्य समुदायों ने चीन के जो किले और नगर आदि को अपन अधिकार में कर लिये हैं, वहां से सब लोग अपनी २ फौज को हटा लेंगे।

अन्यान्य शक्ति पुंज अपनी २ प्रतिज्ञानुसार चीन राज्य परित्याग, अपने २ देशों को सैन्य-दल बुला लिया। किन्तु रूस ने मंचूरिया को परित्याग न कर, नियम विरुद्ध कार्य्य किया। शक्ति पुजों के वार २ कहने और लड़ाई का भय दिख लाने पर भी रूस धूर्त्तता युक्त हो आज कल का बहाना कर बरसों टाल दिया। और मंचूरिया परित्याग करना तो दरकिनार रहा समीप के कोरिया राज्य के ऊपर भी अपनी कुटिल लोलुपदृष्टि निक्षेप करना प्रारम्भ किया। और देखते २

२ कौशल से आलू नदी के तीरवर्ती जंगलों का अधिकार-पत्र ग्रहण कर लकड़ी के बड़े २ कीमती लट्ठे कटाना आरम्भ कर दिया। कोरिया का "उइजू" बन्दर रूस के अधिकार में पूरा तौर से आ गया।

रूस की यह दुरभिसंधि गंभीर दृष्टि से अवलोकन कर जापानी गवर्नमेन्ट स्वभावतः उत्तेजित हो उठी। जापान ने अपने हृदय में विचार किया, रूस तो मंचूरिया परित्याग करेगा नहीं! यदि इसी प्रकार धीरे २ कोरिया देश भी ग्रास कर लिया तो, फिर कुछ ही दिनों में हमारे देश की स्वाधीनता गौरव विलुप्त होते भी देर न लगेगी। आज १=०० सौ वर्ष से जो कोरिया पर हमारा अखण्ड आधिपत्य विद्यमान है, जिससे कि जापान का जीवन मरण निर्भर है। उसी कोरियाराज्य को हमलोग अपने जा। जी कभी रूस के अधिकार में नहीं जाने देंगे। जापानियों ने स्थिर कर लिया कि, यदि पापी रूस न्याय, धर्म और युक्ति के मस्तक में पदाघात कर पर राज्य ग्रास करने को जो तत्पर हुआ है तो हम जापानी वीध लोग भी अपने जीवन की आजन्म स्वाधीनता-गौरव-रक्षा के लिये जगदीश्वर का महामहिमामंडित नाम स्मरण कर धर्म युद्ध में अग्रसर होंगे।

गत २३ जून सन् १९०३ ई० को राजधानी टोकियो के मंत्रणा मंदिर में रूस तून ब्यारन गसन के साथ जापान के परराष्ट्र सचिव ब्यारन कामुरा महाशय का प्रबल वाक्युद्ध

उपस्थित हुआ। सप्त मास व्यापी तर्क वितर्क के बाद कृस्तानी धर्मपरायण रूस के जार महोदय ने स्पष्ट प्रकाश कर दिया कि, मंचूरिया के सम्बन्ध में हम जापान की कोई बात नहीं स्वीकार करेंगे। कोरिया का $\frac{१}{३}$ अंश निरपेक्ष रहेगा। अवशिष्ट अंश रूसाधिकार में रहेगा। २२ दिसम्बर को जापान सम्राट मिकाडो ने उत्तर दिया, यह कदापि न हो सकेगा रूस को निर्दिष्ठ समय के अन्दर मंचूरिया परित्याग करना पड़ेगा। और कोरिया में जापान की प्रभुता अखंड रहेगी।

६ जनवरी सन् १९०३ को रूस ने राजनैतिकभाषा में मंचूरिया में जापान का स्वत्व स्वीकार किया, किन्तु कोरिया के सम्बन्ध में निज अभिप्राय प्रगट कर कहा कि मंचूरिया में समस्त जातिया जिसमें स्वाधीन भाव से वाणिज्य कर सकें, ऐसी व्यवस्था हो जानी चाहिये। और कोरिया में जापान का प्रभुत्व तथा वाणिज्याधिकार पूरीतौर से रहेगा।

इसके बाद २२ दिन व्यतीत हो गये, तथापि रूसी गवर्नमेन्ट ने कोई सन्तोषदायक उत्तर प्रदान न किया। इस घटना द्वारा जापानी सरकार के मन में रूस की बदनियती पूरी तौर से समझ में आ गई। इसलिये रूस से सब राजनैतिक सम्बन्ध त्याग जापान सरकार ने युद्ध की घोषणा प्रगट की।

इस प्रकार रूस की चालाकी स्वार्थपरता दुराकांक्षा

तथा परराज्य हरण करने की लोलुपता द्वारा जो विषमय फल उत्पन्न हुआ और सुदूर प्राच्य भूखंड में जो लोक-भीषण समरानल प्रज्वलित हो उठा उसीका संक्षिप्त वर्णन हम आगे करेंगे।

जल-युद्ध।

८ फरवरी १९१४ ई० को अर्धरात्रि के समय रूस जापान का प्राकृत युद्ध आरम्भ हुआ। उस दिन से लगातार सन्धि पत्र हस्ताक्षरित होने के दिन तक जितने जल-युद्ध हुए हैं (समुद्र के वक्ष स्थल में) उनसभी समरों में विजय लक्ष्मी जापान ही की ओर रही है।

उतने दिनों में रूस की जल सैन्य सम्पूर्ण निर्मूल होगई रूस की कितनी हानि हुई है, यह हम नीचे एक सूची प्रदर्शित कर प्रगट करते हैं।

युद्ध के पहिले दिन तक सुदूर प्रशान्त महासागर में रूस की निम्नलिखित रणतरणी मौजूद थीं।

आर्थर बन्दर के (युद्ध जहाज) जारउइच B रेटविसान C सिवोस्ट पोल G पोलटावा G पारस्वविट G पोबिडा G पेट्रोपेवलास्कि A. (लोह मण्डित रणतरणी) बेयन, E; (रक्षित रणतरणी) अस्फल्ड C. नविक E. डियान्ना D पालाडा G वेरिन E कोरिया के उपकूल में, (रक्षित रणतरणी) वेरियाग E कोरिज E।

वेलाडिवष्टक बन्दर की (लोह मण्डित रणतरणी) थोमोबिया, रसिया, F रूरिक E बगाटिर F

उपरोक्त प्रथम श्रेणी के रणतरणियों में A चिन्हित जहाज जापान के आग्नेय यन्त्रों में पड़, मय ७०० फौजी जवानों के और प्रचुर युद्धोपयोगी सामान के साथ समुद्र में डूब गया। इन जहाजों में सुप्रशिद्ध नौ-सेनापति भ्याकारफ और जगत विख्यात चित्रकार वे रेट सागिन भी अवस्थित थे।

B चिन्हित जहाज चीन के "कियाचिउ" बन्दर के निकट जल में मग्न हुआ इसमें सेनापति "उइटगाट" दो सौ जवानों के साथ मृत्यु मुख में पतित हुए थे।

C चिन्हित अस्कल्ड चीन के "ऊसा" बन्दर में भग्नावस्था दशा में बन्दी हुआ था।

D चिन्हित फ्रान्सीसी अधिकृत सैगन बन्दर में कैद हुआ था।

E चिन्हित ६ रणतरणी जापान के गोला और टारपेडो के अघातों द्वारा प्रचुर सैन्य तथा युद्धोपकरन सतसागर सलिल में निमग्न हुई थीं।

F चिन्हित दोनों रणतरणी तेजी से भागते समय समुद्र के पर्वतों से टकरा कर खण्ड विखण्ड हो समुद्र में डूब गई।

G चिन्हित प्रथम श्रेणी के E जहाज आर्थर बन्दर में जल मग्न हुए थे, पाछे से जापानियों ने निकाल लिये।

इसके सिवाय हनिसि, किरगाछि, कूनि, रेछफनि प्रभृति अनेक सामानवाही और टारपेडो ध्वंसिनी तरणियां विनष्ट और निरपेक्ष बन्दरों में जाकर कैद होगई थीं। रेसिटेलनी,

मगोलिया आदि कई एक जहाजों को जापानियों ने युद्ध में रूस स छीन लिये हैं।

उपरोक्त सब जहाजों की कीमत तीन सौ करोड़ रुपये से अधिक ही का हिसाब लगाया गया है।

इस युद्ध में जापान का "ह्यातसुज" नामक युद्ध जहाज "योशिनो" नामक रक्षित रणतरणी और कई एक टारपेडो बोट जल मग्न हुए थे।

स्थल-युद्ध।

रूस जापान के समर में जितने उल्लेख योग्य युद्ध संघटित हुए हैं। उन सभी में जयलक्ष्मी रूस के प्रति विरुद्धता प्रगट करती गई है। क्या आलू नदी के किनारे, क्या दुरारोह न्यानसन पर्वत में, क्या अयेफ्यानकू प्रान्त में, क्या सुरक्षित केइयिंग नगर में, क्या दुर्गम मेटियन गिर-प्रदेश में, क्या टोसिचिओ क्षेत्र में, सभी स्थानोंही में रूस सैन्य पराजित हो भगाई गई। जल्दी में भागते समय रूस सेना पतियों को प्रति युद्ध में बहुत सी फौज के साथ सैकड़ो तोप हजारों बन्दूक बहुतसी रसद सामग्री आदि परित्याग कर लज्जित हो, अपना प्राण बचाने के लिये भागना पड़ा है

रूसी सिपाही और अफसरों क ठीक वीरों के समान प्राण पण से घोर युद्ध करने पर भी उक्त छ ओ समर क्षेत्र में वे लोग पराजित ही हुए हैं। उन लोगों के प्रत्येक युद्धोंही में जान पर खेलकर अपूर्व बुद्धिमत्ता और वीरत्व की पराकाष्ठा

उपरोक्त प्रथम श्रेणी के रणतरणियों में A चिन्हित जहाज जापान के आग्नेय यन्त्रों में पड़, मय ७०० फौजी जवानों के और प्रचुर युद्धोपयोगी सामान के साथ समुद्र में डूब गया। इन जहाजों में सुप्रसिद्ध नौ-सेनापति भ्याकारफ और जगत विख्यात चित्रकार वे रेट सागिन भी अवस्थित थे।

B चिन्हित जहाज चीन के "कियाचिउ" बन्दर के निकट जल में मग्न हुआ इसमें सेनापति "उईटगार्ट" दो सौ जवानों के साथ मृत्यु मुख में पतित हुए थे।

C चिन्हित-अस्कल्ड चीन के "ऊसा" बन्दर में भग्नावस्था दशा में बन्दी हुआ था।

D चिन्हित फ्रान्सीसी अधिकृत सैगन बन्दर में कैद हुआ था।

E. चिन्हित ६ रणतरणी जापान के गोला और टारपेडो के अघातों द्वारा प्रचुर सैन्य तथा युद्धोपकरन सतसागर सलिल में निमग्न हुई थीं।

F चिन्हित दोनों रणतरणी तेजी से भागते समय समुद्र के पर्वतों से टकरा कर खण्ड विखण्ड हो समुद्र में डूब गईं।

G चिन्हित प्रथम श्रेणी के E जहाज आर्थर बन्दर में जल मग्न हुए थे, पाछे से जापानियों ने निकाल लिये।

इसके सिवाय इनिसि, किरगाछि, वूनि, रेष्ठफनि प्रभृति अनेक सामानवाही और टारपेडो ध्वंसिनी तरणियां विनष्ट और निरपेक्ष बन्दरों में जाकर कैद होगई थीं। रोसिटेलनी,

मंगालिया आदि कई एक जहाजों को जापानियों ने युद्ध में रूस से छीन लिये हैं।

उपरोक्त सब जहाजों की कीमत तीन सौ करोड़ रुपये से अधिक ही का हिसाब लगाया गया है।

इस युद्ध में जापान का "हातसुज" नामक युद्ध जहाज "योशनो" नामक रक्षित रणतरणी और कई एक टारपेडो बोट जल मग्न हुए थे।

स्थल-युद्ध।

रूस जापान के समर में जितने उल्लेख योग्य युद्ध संघटित हुए हैं। उन सभी में जयलक्ष्मी रूस के प्रति विरुद्धता प्रगट करती गई है। क्या आलू नदी के किनारे, क्या दुराराह न्यानसन पर्वत में, क्या अयेफ्यानकू प्रान्त में, क्या सुरक्षित केहयिंग नगर में, क्या दुर्गम मेटियन गिर-प्रदेश में, क्या टोसिचिओ क्षेत्र में, सभी स्थानोंही में रूस सैन्य पराजित हो भगाई गई। जल्दी में भागते समय रूस सेनापतियों को प्रति युद्ध में बहुत सी फौज के साथ सैकड़ों तोप हजारों बन्दूक बहुतसी रसद सामग्री आदि परित्याग कर लज्जित हो, अपना प्राण बचाने के लिये भागना पड़ा है

रूसी सिपाही और अफसरों क ठीक वीरों के समान प्राण पण से घोर युद्ध करने पर भी उक्त छ: ओ समर क्षेत्र में वे लोग पराजित ही हुए हैं। उन लोगों के प्रत्येक युद्धोंही में जान पर खेलकर अपूर्व बुद्धिमत्ता और धीरत्व की

प्रदर्शित करने पर भी, ये लोग निष्ठुर अदृष्ट देवी के चित्त विनोदन में सामर्थ नहीं हासके हैं।

सप्तम युद्ध पृथ्वी के समर इतिहास में "लेयङ्ग" युद्ध नाम से लिखा गया है। यह बीसवीं शताब्दी का सब से प्रथम प्रधान लोक-क्षयकर महायुद्ध है। रूस सेनापति कुरोपाटकिन साढ़े तेरह लाख प्रथम श्रेणी की सुशिक्षित फौज लेकर और ६ सौ से अधिक तोपों के साथ लेयङ्ग नगर में निवास करते थे। नदी पर्वत प्राचीर और परिखा आदि से यह शहर स्वभावत ही दुरभेद्य और दृढ़ था। तिसपर भी रूस के षष्ठमास व्यापी विपुल अध्यवसाय और असामान्य चेष्टा से लेयङ्ग नगरी एक अजेयदुर्ग बन गई थी। वहां पर महायुद्ध होने की आशंका से कुरोपाटकिन ने अपना अवस्थान सुरक्षित करने के सम्बन्ध में कुछ त्रुटि नहीं की थी, किन्तु—

हाय-तिस पर भी विधाता वामही हुआ! भीषण पराजय सहन कर और महालज्जित हो आत्म-रक्षा के लिये तस्करों के समान रूसियों को भागना पड़ा। अमेरिका, जापान और विलायती पत्र सम्पादकों ने कुरोपाटकिन के इस अद्भुत पलायन सम्वाद को वर्णन करते समय अत्यंत आश्चर्य प्रगट किये थे।

फरासीसी, जर्मन और रूस के पत्र सम्पादकों ने कुछ भी इस विषय में आनन्द प्रकाश न कर, स्तम्भित हो गये थे। इस तरह पीठ दिखलाने के विषय में रूस की सर्व साधारण

गज़ा ने कुछ भी नहीं कहा था जार महोदय और उनके मंत्रियों ने यह महापराजय का सम्वाद मलिन वदन मंडल से किसी प्रकार सुन लिया, किन्तु शोक को नहीं समाल सके थे; इस कारण फिर बहुत सी सेना युद्ध स्थल में प्ररित किया।

जो दाम्भिक सेनापति तीन लाखमात्र फौज लेकर युद्धारम्भ के छ महीने के अन्दर ही जापान की राजधानी "टोकियो" के नन्दन कानन में प्रवेश करने का भरोसा सम्राट को दिया था उनके अपूर्व वीरत्व प्रगट करने पर भी बार २ पलायन कौशल से व्यथित होते देख हम भी आनन्द प्रकाश नहीं कर सकते हैं। इस महा युद्ध के भयानक फल से विचलित हो कुरोपाटकिन को लज्जित कर जार महोदय ने द्वितीय सेनापति ग्रिपनवर्ग को रूस से मन्चूरिया (युद्ध स्थल) में भेजा था।

रूसी गवर्नमेण्ट ने जो हिसाब "लेयङ्ग" युद्ध का प्रकाश किया, था वह इस प्रकार था। ३० हजार फौज हताहत हुई, जापान के हताहतों की संख्या चालीस हजार के करीब थी। इस युद्ध में १३ रूसी सिपाही और ३० युद्ध के अस्त्र जापान ने बंदी किये थे। इसके सिवा, चार हजार बंदूक, १६ लाख टोटा, १० हजार शेल गोला १२ सौ गाड़ी १६ हजार जमीन साफ करने के हथियार आदि ६५०० कोट पटलून १८ हजार कनस्टर माम और प्रचुर रेल बनाने का समान जापान के हस्तगत हुआ था।

प्रदर्शित करने पर भी, वे लोग निष्ठुर अदृष्ट देवी के चित्त विनोदन में सामर्थ नहीं हासक हैं।

सप्तम युद्ध पृथ्वी के समर इतिहास में "लेयङ्ग" युद्ध नाम से लिखा गया है। यह बीसवीं शताब्दी का सब से प्रथम प्रधान लोक-क्षयकर महायुद्ध है। रूस सेनापति कुरोपाटकिन साढ़े तेरह लाख प्रथम श्रेणी की सुशिक्षित फौज लेकर और ६ सौ से अधिक तोपों के साथ लेयङ्ग नगर में निवास करते थे। नदी पर्वत प्राचीर और परिखा आदि से यह शहर स्वभावत ही दुरभेद्य और दृढ़ था। तिसपर भी रूस के षट्मास व्यापी विपुल अध्यवसाय और असामान्य चेष्टा से लेयङ्ग नगरी एक अजेयदुर्ग बन गई थी। वहां पर महायुद्ध होने की आशंका से कुरोपाटकिन ने अपना अवस्थान सुरक्षित करने के सम्बन्ध में कुछ त्रुटि नहीं की थी, किन्तु—

हाय-तिस पर भी विधाता वामही हुआ! भीषण पराजय, सहन कर और महालज्जित हो आत्म-रक्षा के लिये तस्करों के समान रूसियों को भागना पड़ा। अमेरिका, जापान और विलायती पत्र सम्पादकों ने कुरोपाटकिन के इस अद्भुत पलायन सम्बाद को वर्णन करते समय अत्यंत आश्चर्य प्रगट किये थे।

फरासीसी, जर्मन और रूस के पत्र सम्पादकों ने कुछ इस विषय में आनन्द प्रकाश न कर, स्तम्भित हो गये थे। तरह पीठ दिखलाने के विषय में रूस की सर्व साधारण

राजा ने कुछ भी नहीं कहा था जार महोदय और उनके मंत्रियों ने यह महापराजय का सम्वाद मलिन बदन मंडल से किसी प्रकार सुन लिया, किन्तु शोक को नहीं समाल सके थे, इस कारण फिर बहुत सी सेना युद्ध स्थल में प्रेरित किया।

जो दाम्भिक सेनापति तीन लाखमात्र फौज लेकर युद्धारम्भ के छ महीने के अन्दर ही जापान की राजधानी "टाकियो" के नन्दन कानन में प्रवेश करने का भरोसा सम्राट को दिया था उनके अपूर्व वीरत्व प्रगट करने पर भी बार २ पलायन कौशल से व्यथित होते देख हम भी आनन्द प्रकाश नहीं कर सकते हैं। इस महा युद्ध के भयानक फल से विचलित हो कुरोपाटकिन को लज्जित कर जार महोदय ने द्वितीय सेनापति ग्रिपनवर्ग को रूस से मंचूरिया (युद्ध स्थल) में भेजा था।

रूसी गवर्नमेण्ट ने जो हिसाब "लेयङ्ग" युद्ध का प्रकाश किया, था वह इस प्रकार था। ३० हजार फौज हताहत हुई, जापान के हताहतों की संख्या चालीस हजार के करीब थी। इस युद्ध में १३ रूसी सिपाही और ३० युद्ध के अस्त्र जापान ने बंदी किये थे। इसके सिवा, चार हजार बंदूक, १६ लाख टोटा, १० हजार शेल गोला १२ सौ गाड़ी १६ हजार जमीन साफ करने के हथियार आदि ६४०० कोट पटलुन १६ हजार कनस्टर माम और प्रचुर रेल बनाने का समान जापान के हस्तगत हुआ था।

अष्टम युद्ध "सा" नदी के किनारेपर होने के कारण सा हो युद्ध के नाम से इतिहासों में दर्ज किया गया है। इस युद्ध में सेनापति कुरापाटकिन तीन लाख फौज के साथ विपुल-विक्रम से जापानी दल पर आक्रमण किया था। किन्तु अन्त में पराजित हो कुरोपाटकिन ही को भागना पड़ा, इस साहो युद्ध में रूस की जितनी हानि हुई थी, लेखकों ने लिखा है कि इसके पहिले किसी युद्ध में रूस की इतनी हानि नहीं हुई थी।

युरोप के सर्वश्रेष्ठ सेनापति साहो-युद्ध के भीषण परिणाम को अवलोकन कर चकित हो गये थ। इस युद्ध में ७०९ रूसी जापान के पास कैदी हुए थे। समरक्षेत्र में जापानी मुरदा उठाने वालों ने १५ हजार रूसी मुरदों को दफन किया इसके सिवा ४९ बड़ी २ तोप ५४०० बदूक ७८ हजार टोटा और ७ हजार बड़े २ गोलों को विजयी जापान ने रूसियों से छीना था अनेक-इतिहास लेखकों का अनुमान है कि इस युद्ध में एक लाख के करीब रूसी फौज हताहत हुई थी।

सा हो युद्ध में जापानी सैन्य की भी असाधारण क्षति नहीं हुई। ३० हजार जापानी फौज हताहत और १२ तोपें रूस के कबजे में चली गई थी।

नवम युद्ध द्वितीय सा हो समर के नाम से कहा गया है। कोई २ ग्रंथकार इसको "हिकन्टोइयकार" नाम से अपने ग्रंथों

में लिखा है कि २५ जनवरी को द्वितीय रूस सेनापति ग्रिपन वर्ग ने विपुल सैन्य के साथ बड़ी सावधानी से जापान वाहिनी के वामभाग में आक्रमण किया। प्रथम चार दिन के युद्ध को देख। बहुत लोगो ने अनुमान कर लिया था कि, अवश्य ही इस वार जय लक्ष्मी रूस के गले में विजयहार पहिनावेगी, किन्तु हाय ! यह होते २ भी नहीं हो सका! रूस के भग्न अदृष्ट में यह शुभ मुहूर्त्त पाकर भी फिर गया। जापान सेनापति "ओयामा" के अपूर्व सेना सञ्चालन कौशल द्वारा चौथे दिन के शेष रात्रि में युद्ध की गति बदल गई, लेन के देने पड़ गये। भोर होते २ रूस कमजोर हो गया तथा सम्पूर्णरूप से पराजित हो सेना खेत छोड़ भागी और जापानियों ने पीछा किया।

इस युद्ध का वृतान्त इस प्रकार पीछे से प्रकाश हुआ था कि, ३६ हजार रूसी सेना और सात सहस्र जापानी फौज हताहत हुई थी।

अपनी पराजय के सम्बन्ध में ग्रिपनवर्ग ने प्रकाश किया था कि, कुरोपाटकिन ने यथा समय सेना की सहायता मुझको नहीं पहुचाई इसी कारण यह हार हुई। और कुरोपाटकिन ने ज़ार महोदय को लिखा था कि ग्रिपनवर्ग ने मुझ से बिना सलाह लियेही एकाएक यह युद्ध आरम्भ कर दिया था, इसी कारण यह महापराजय हुई है।

आर्थरचन्द्र अधिकार पृथ्वी के समर-इतिहास में एक

अपूर्व कीर्त्ति सूचक है। जापानियों ने २३३ दिनों तक इस महादुर्ग को घेर कर बहुत सी फौज का बलिदान कर दिया, किन्तु अन्ततः पहली जनवरी १९०५ ई० को अजेय आर्थर मकल में मिकाडो की सूर्य्याङ्कित विजय-वैजयन्ती उड़ी। इस बन्दर को अधिकार करने में जापानियों ने जो असाधारण सहिष्णुता, विपुलअध्यवसाय और अद्भुत शूर वीरता आदि प्रदर्शन किया है। वर्त्तमान जगत के इतिहास में उसकी तुलना नहीं होसकती।

रूस सेनापति महावीर ष्टोसल प्रतिज्ञा कर जार महोदय को लिखा था कि एक भी आदमी के जीवित रहते मैं इस किले को नहीं त्यागूंगा आप शंका न कीजिये।'

अन्त में उन्हीं कठोरकर्मी सेनापति स्टोसल को निरूपाय हो शोच, दुःख, लज्जा अभिमान से कातर हो, जापानी सेनापति (पोर्ट आर्थर विजयी) नोगी को लिखना पड़ा था। बस अब सब हो चुका हम आत्म-समरपण करते हैं, आप कृपा दृष्टि कीजियेगा।

पहली जनवरी को आर्थर बन्दर स्थित सभी लोगों ने जापान की सेवा में आत्म समरपण किया। इस से बन्दर के सब किले, गोला, गोली, तोप, बन्दूक, जहाज आदि सब सामान विविध वाणिज्य जहाज आदि भी जापानी गवर्नमेण्ट के हस्त गत हुए थे।

रूस ने जिस सम्पत्ति को दस वर्ष पहिले जापान को

धोखा दे अपने कबजे में कर लिया था जापान सेनापति "नोगी" केवलमात्र जापानी सेना की सहायता से अपने अधिकार में कर लिया। इसको देख सुन कर जो आनन्द जापानियों को हुआ, वह इस क्षुद्र लेखनी द्वारा प्रगट करना असम्भव है।

रूस कर्मचारियों के विशेष वीरत्व प्रकाश करने के समय जापान सेनापति ने विशेष उदारता प्रगट करते हुए लिखा था कि–जो फौजीअफसर तथा सिपाही यह प्रतिज्ञा करें कि, हम फिर कभी जापान के विरुद्ध युद्ध नहीं करेंगे। उन्हें हम किले से निकाल कर स्वदेश लौट जाने की आज्ञा दे देंगे। उसी अनुसार इसी प्रकार की सपथ कर महावीर स्टोसल ४४१ फौजी अफसर व सिपाही तथा २२९ अरदलियों के साथ मुक्तिलाभ किया था। अवशिष्ट ४३ अफसर और २३४९१ जन सैनिक कैदी बनाकर जापान भेजे गये थे।

सैन्य और कर्मचारी के अतिरिक्त विजयी जापान सेनापति ने आर्थर बन्दर के ५६ स्थायी दुर्ग, ५४६ तोप और ३५ हज़ार बन्दूक ८२ हजार शेल गोला, १९ लाख मन कोयला, ४ युद्ध जहाज, २ लोह मंडित रणतरणी, १४ टारपेडो तरणी १० वाणिज्य जहाज, ३५ और जहाज तथा बहुत सा रेल बनाने का समान प्राप्त किया था।

दशम युद्ध मकडन, समर के नाम से प्रसिद्ध है।



जनरल वैरन नोगी।

धोखा दे अपने कब्जे में कर लिया था जापान सेनापति "नोगी" केवलमात्र जापानी सेना की सहायता से अपने अधिकार में कर लिया। इसको देख सुन कर जो आनन्द जापानियों को हुआ, वह इस क्षुद्र लेखनी द्वारा प्रगट करना असम्भव है।

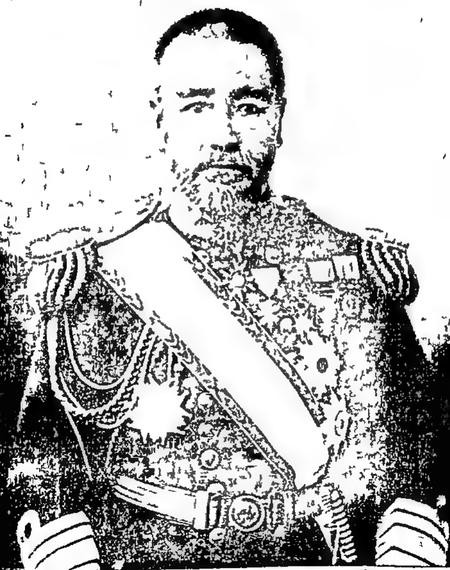
रूस कर्मचारियों के विशेष वीरत्व प्रकाश करने के समय जापान सेनापति ने विशेष उदारता प्रगट करते हुए लिखा था कि-जो फौजीअफसर तथा सिपाही यह प्रतिज्ञा करें कि, हम फिर कभी जापान के विरुद्ध युद्ध नहीं करेंगे। उन्हें हम किले से निकाल कर स्वदेश लौट जाने की आज्ञा दे देवेंगे। उसी अनुसार इसी प्रकार की सपथ कर महावीर स्टोसल ४४१ फौजी अफसर व सिपाही तथा २२९ अरदलियों के साथ मुक्तिलाभ किया था। अवशिष्ट ४३ अफसर और २३४९१ जन सैनिक कैदी बनाकर जापान भेजे गये थे।

सैन्य और कर्मचारी के अतिरिक्त विजयी जापान सेनापति ने आर्थर वन्दर क ५६ स्थायी दुर्ग, ५४६ तोप और ३५ हजार बन्दूक ८२ हजार शेल गोला, १९ लाख मन कोयला, ४ युद्ध जहाज, २ लोह मण्डित रणतरणी, १४ टारपेडो तरणी, १० वाणिज्य जहाज, ३५ और जहाज तथा बहुत सा रेल वनाने का समान प्राप्त किया था।

दशम युद्ध मकुडन, समर के नाम से प्रसिद्ध है।

नहीं मालुम होता था। इस समय जर्मनी फ्रान्सीसी आदि निरपक्ष कहलानेवाली शक्ति पुंजों ने भी विविध उपायों द्वारा रूस की सहायता की थी। यहा तक कि अंग्रेजी कम्पनियों ने भी द्रव्य के लालच में फस कर, इस विकराल-बेड़े को नाना प्रकार की सहायता दी थी। विशेषतः जब रूस वाहिनी चीन सागर पार कर जापान समुद्र के निकट उत्तर की ओर से अग्रसर हुई उस समय तक जापानी नौसेनापति टोगो शत्रु की गति रोध करने के लिये किसी प्रकार की चेष्टा नहीं की थी, तब तो जापान के विजय-सम्बन्ध में समस्त संसार को ही दारुण सन्देह होने लगा किन्तु हाय! इतनी चेष्टा और आडम्बर होते हुए भी रूसियों के भाग्य दोष के कारण फिर भी महा पराजय हुई! संसार में फिर एक बार धर्म की जय और अधर्म के लिये ईश्वरीय नियम की घोषणा प्रचार हुई।

जापान और कोरिया प्रायः द्वीप के बीच में कोरिया-प्रणाली है। गत २९ मई शनिवार १९०५ ई० को वहां रूस-नौ-वाहिनी चार भागों में विभक्त हो इस प्रणाली में घुसी किन्तु घुसते ही वहां जापानी जहाजी बेड़ों से घिर गई। फिर क्या था लेने के देने पड़ गये। वीर जापानियों ने शनिवार के प्रातःकाल के आरम्भ से सोमवार तक बिना एक क्षण भी आराम किये बराबर दिन रात तीन दिन तक युद्ध करते रहे। रूसी बेड़े को एक दम नष्ट भ्रष्ट कर डाला। प्रथम आक्र-



एडमिरल टोगो।

मण के १२ ही घन्टे में रूसी बेडा घबड़ा कर भागना शुरू कर दिया, किन्तु जापानी टारपेडो के आघातों से बिलकुल नेस्त नाबूद हो गया भागने में भी पनाह न मिली। जितनी देर तक कि शत्रु पूरी तौर से पराजित नहीं हुआ, उतनी देर तक जापानी फौज ने विश्राम लेना पाप का कार्य समझ लिया था। और सब बेड़ों के जापानियों ने उक्त बात की सपथ कर ली थी कि, बिना शत्रु को नष्ट किये पानी भी न पियेंगे।

इस महासमर में रूस का रियाजसूवा, यफअलेकजेण्डर, बोरिडिनो, डिमिर्डी, राचमहफ, वालाडिमिर, मनेमोक, जामयुग, ऊषाहक, असलिया, नाचरिन, आलामाज आदि कई एक लड़ाई के जहाज कोरिया प्रणाली स्थित सुसीमर द्वीप के पास डूब गये। निकोलस ओरेल, आप्राफसिन, सेनियाबिन, और चिवोमि यह पाच जहाज विजयी जापानियों ने छीन लिये। इन पाचों जहाजों की कीमत २० करोड़ रुपये से कम न थी।

इस महायुद्ध में जापान के तीन टारपेडो नाव बिनष्ट और ४०० मनुष्य हताहत हुए थे। सेनापति टोगो और एडमिरल यिशु भी सामान्य रूप से महायुद्ध करते समय कुछ घायल होगये थे।

इस युद्ध में ५५०० सौ रूसी सेना के साथ प्रधान सेनापति रोजडेजवेनस्फि, नेवोगेट्रफ, फोकरसाम, और वोट्रोवोस्कि, जापान के कैदी हुए थे।

अत्यन्त दर्प से लंकेश्वर रावण विनष्ट हुआ था, अतिशय अभिमान से कुरूपति दुर्योधन का सर्वनाश हुआ—और अति लोभ के कारण रूस सम्राट निकोलस का मान मर्दन इस बीसवीं शताब्दी में हुआ। आधे युरोप और अर्ध एसिया में जिसका अटल राज विराजमान है। इस युद्ध के प्रताप से उन्हीं रूस सम्राट को जापान की इच्छानुसार सन्धि पत्र पर दस्तखत करना पड़ा। धन बल, बाहुबल, मनुष्य बल की अपेक्षा धर्म-बल कितना श्रेष्ठ है, यह बात सायद उनको मालूम नहीं थी इसी कारण यह आफत झेलनी पड़ी। अर्ध पृथ्वी के अप्रिय आधीश्वर की अपेक्षा क्षुद्र द्वीप के प्रिय सम्राट कितने शक्तिशाली होते हैं? जार महोदयने इस युद्ध में उसका प्रत्यक्ष प्रमाण प्राप्त कर लिया।

जापान के इस अश्रुत पूर्व जयलाभ से तमाम एसिया परमानन्दित हुआ था जापान ने गत महायुद्ध में पाश्चात मोह-जाल को छिन्न भिन्न कर प्राच्य जगत का मुखोज्वल किया। इसी लिये भारत वर्ष के निवासी भी परमानन्दित हुए। किन्तु प्रबल प्रतापी रूस सम्राट की अवस्था का स्मरण होने से भी हमें कुछ शोक प्रसित होना चाहिये।

भारतवर्ष के भीषण दुर्भिक्ष के समय रूस ने नाना प्रकार की सहायता भेजी थी। रूस सम्राट निकोलस हमारे भूतपूर्व सम्राट सप्तम एडवर्ड के रिस्तेदार हैं। इस कारण भी कुछ भारतवासी उनके दुःख से दुःखी हुए थे। किन्तु यदि यह

इन लोगों की दुर्भिक्ष-विपद में सहायता न करते तथापि कुछ शोक प्रगट करना उचित ही है। क्योंकि प्रबल भूमिकम्प में गगनस्पर्शी अट्टालिका भूमिशायी होने से कौन सा वह सज्जन पुरुष है, जो खेद प्रदर्शित न करेगा।

गत रूस जापान के युद्ध का सब ख्यातनामा जिसमें रूस सेनापतिगणों के दारुणभाग्य का उलट फेर हुआ नीचे उनकी सूची लिखते हैं।

स्थल-सेनापति।

(जेनरेल उपाधिधारी जो २८ जन युद्ध क्षेत्र मे उपस्थित थे)

१—ष्टोसल कैदी *	१०-रेटको वास्कि (मारे गये)
२—ग्रिपन वर्ग (अपमानित हो स्वदेश वापिस आगये)	११-स्मारनफ (बन्दी हुआ)
३—अरलफ =	१२-रेचरालिनिस्कि =
४—देशक =	१३-प्लाग =
५—फेलार (युद्ध-क्षेत्र में मारे गये)	१४-विलि =
६—कोन्डो चेनको =	१५-गोरबाट को भास्कि =
७—आरापिटास्कि =	१६-निकाटिन =
८—रियालिनाकिन =	१७-फक (बन्दी)
९—स्नोसेनस्कि =	१८-कोन्ड्राचिच (घोर रूप से घायल हुए)

* रूस में मुकदमा कायम हो विचार द्वारा १० वर्ष के लिये जेल भेजे गये।

१९-कासाटोलिनिस्कि (आहत)
२०-साचूलिच (पदावत)
२१-ग्रोकेलवर्ग (आहत)
२२-रैनेनकाम्प =
२३-मिचचेनको =
२४-कुरोपाटकिन (पदावनत)
२५-बिलडारि =
२६-लिनाविच (यह युद्ध क्षेत्र में अन्त तक रहे)
२७-कवलारस (युद्ध के शेष तक अपने पद पर विराजमान थे)
२८-साकारक =

जल-सेनापति ।

(एडमिरिल उपाधिधारी १६ वीर सेनापति-युद्ध में नियुक्त थे)

१—फ्लेकस्फि-(अपमानित हो वापिस गये)
२—ष्टार्क =
३—हकाई डलफ =
४—येजो आजफ =
५—उखटोमस्कि (बन्दी)
६—उइरेन =
७—लर्चीचनास्कि =
८—ग्रिगोरिविच =
९—रोजडेजवेनस्कि (जपाना के बन्दी हुए)
१०—कोकिरशाम =
११-बोट्रोवास्कि =
१२-मेकोरफ (निहत)
१३-नेवागेटफ=
१४-मोलस=
१५-उइटगेट =
१६-जेसुरू (युद्ध के शेष पर्यन्त वलाडिवस्टक बन्दर में थे

रूस जापान की संधि।



लँटिक नौ वाहिनी का सोचनीय, परिणाम अवलोकन कर अमेरिका युक्त राज्य के प्रेसीडेन्ट रूजवेल्ट महोदय ने ९ जून १९०५ ई० को जापान के "युयुत्सुहृय" राजवंश की सेवा में संधि का प्रस्ताव किया। उसी अनुसार रूस की ओर से काउन्टडिउटी और जापान की ओर से व्यारन कामुरा संधि दूत नियत हो अमेरिका के पोर्टसमाउथ नगर में पहुंचे। १० अगस्त को संधि विचार का पहिला अधिवेशन हुआ। प्राय: एक महीने तक प्रबल तर्क वितर्क के बाद ५ सेप्टेम्बर को उभय पक्ष के संधि पत्र पर हस्ताक्षर कर बीसवीं शताब्दी के प्रथम महायुद्ध को बंद किया।

नीचे संधि की हरेक बातों को हम नंबरवार लिखते हैं—

१—युद्ध के क्षतिपूर्णस्वरूप जापान गवर्नमेन्ट रूस से कुछ न लेवे। जो सब रूसी फौज कैदी हो कर जापान में हैं उसमें जो खर्च लगा होगा रूस जापान को देवेगा।

२—रूसाधिकृत सगेलियन द्वीप समान दो अंश में विभक्त कर उसका दक्षिणी भाग जापान पावे, इस अर्धांश

में जापान गवर्नमेन्ट स्थायी भाव से कोई किले वगैर न बनवाये "येशो" और संगलियन द्वीप के मध्यवर्ती लापिरुज प्रणाली जापान के अधिकार में रहेगी।

३—"लियाऊटंग" उपद्वीप मय किले, आदि के आर्थर बन्दर और इलियट द्वीप पुञ्ज जापान सरकार पावेगी।

४—युयुत्सू जाति द्वय निर्दिष्ट समय के अन्दर मंचूरिया परित्याग कर देवेगी।

५—स्वराज्य में चीन गवर्नमेन्ट का पूरा अधिकार रहेगा।

६—चीन राज्य में समस्त वैदेशिक शक्तियों को समान वाणिज्याधिकार रहेगा।

७—हार्विन से आर्थर बन्दर तक रूस की रेल सड़क जापान गवर्नमेन्ट पावेगी ब्लाडिवस्टक की रेलवे में रूस का अधिकार रहेगा।

८—कोरिया राज्य के सब विभागों में जापान का पूर्ण अधिकार रहेगा।

९—रूस के अधिकृत बलाडिवष्टक से "वेरि." प्रणाली तक साईवेरिया प्रदेश के उपकूलों में जापानियों को मछली पकड़ने का पूरा अधिकार रहेगा।

१०—रूस के जो सब युद्ध और वाणिज्य जहाज जापानी फौज ने छीन लिये हैं और जो समुद्र में डूब गये हैं * वह सब जापानी सरकार को मिलें।

११—रूस के जो सब युद्ध और वाणिज्य जहाज निरपेक्ष

बन्दरों में आत्मसमर्पण किये हैं, वह सब रूसी गवर्नमेन्ट वापिस पा जावे।

१२—उपरोक्त संधिपत्र का स्थूल मर्म प्रकाश होने के बाद से समग्र सभ्यजगत में हलचल मच गई थी। विलायती "टाइम्स" ने कहा था जापानियों ने इस संधि को स्वीकृत कर जिस उदारता महानुभावता और आत्मसंयमता का परिचय प्रदान किया है वह पृथ्वी के इतिहास में और कहीं नहीं मिलेगा। "मॉर्निङ्ग पोस्ट" ने कहा था इस महात्याग स्वीकार से जापान का विजय गौरव सैकड़ों गुणा बढ़ गया। "ग्राफिक" ने कहा था कृस्तानी सम्राटों में इस प्रकार की महान उदारता के दृष्टान्त बहुत ही कम मिलते हैं जो जापान ने प्रगट किया है। "डेलीमेल" ने लिखा था युद्ध कौशल में जापानी श्रेष्ठ वीर होने पर भी कूट राजनीति में रूसियों की बराबरी नहीं कर सके हैं।

"ष्टान्डार्ड" ने प्रकाश किया था कि रूस गवर्नमेन्ट ने चुप चाप युद्ध का खर्च जापानियों को कुछ दिया है और शेष देना स्वीकार कर लिया है किन्तु लोक लज्जा के कारण जार महोदय के विशेष अनुरोध से यह बात संधि पत्र में नहीं लिखी गई तथा बहुत लोग इस बात को जानते भी नहीं हैं।

जापानी पत्र, सम्पादकों ने लिखा था, जापान की जय-तुलना में यह सन्धि पत्र कुछ चीज नहीं है।

में जापान गवर्नमेन्ट स्थायी भाव से कोई किले वगैर न बनवावे "येशो" और संगेलियन द्वीप के मध्यवर्त्ती लापिरुज प्रणाली जापान के अधिकार में रहेगी।

३—"लियाऊटंग" उपद्वीप मय किले, आदि के आर्थर बन्दर और इलियट द्वीप पुज जापान सरकार पावेगी।

४—युयुत्सु जाति ञय निर्दिष्ट समय के अन्दर मंचूरिया परित्याग कर देवेगी।

५—स्वराज्य में चीन गवर्नमेन्ट का पूरा अधिकार रहेगा।

६—चीन राज्य में समस्त वैदेशिक शक्तियों को समान वाणिज्याधिकार रहेगा।

७—हार्बिन से आर्थर बन्दर तक रूस की रेल सड़क जापान गवर्नमेन्ट पावेगी व्लाडिवस्टक की रेलवे में रूस का अधिकार रहेगा।

८—कोरिया राज्य के सब विभागों में जापान का पूर्ण अधिकार रहेगा।

९—रूस के अधिकृत वलाडिवष्टक से "वेरि" प्रणाली तक साईवेरिया प्रदेश के उपकूलों में जापानियों को मछली पकड़ने का पूरा अधिकार रहेगा।

१०—रूस के जो सब युद्ध और वाणिज्य जहाज जापानी फौज ने छीन लिये हैं और जो समुद्र में डूब गये हैं * वह सब जापानी सरकार को मिलें।

११—रूस के जो सब युद्ध और वाणिज्य जहाज निरपेक्ष

बन्दरों में आत्मसमर्पण किये हैं, वह सब रूसी गवर्नमेन्ट वापिस पा जावे।

१२—उपरोक्त संधिपत्र का स्थूल मर्म प्रकाश होने के बाद से समग्र सभ्यजगत में हलचल मच गई थी। विलायती "टाइम्स" ने कहा था जापानियों ने इस संधि को स्वीकृत कर जिस उदारता महानुभावता और आत्मसंयमता का परिचय प्रदान किया है वह पृथ्वी के इतिहास में और कहीं नहीं मिलेगा। "मॉनिङ्ग पोस्ट" ने कहा था इस महत्याग स्वीकार से जापान का विजय गौरव सैकड़ों गुणा बढ़ गया। "ग्राफिक" ने कहा था क्रुस्तानी सम्राटों में इस प्रकार की महान उदारता के दृष्टान्त बहुत ही कम मिलते हैं जो जापान ने प्रगट किया है। "डेलीमेल" ने लिखा था युद्ध कौशल में जापानी श्रेष्ठ वीर होने पर भी कूट राजनीति में रूसियों की बराबरी नहीं कर सके हैं।

"ष्ट्रान्डार्ड" ने प्रकाश किया था कि रूस गवर्नमेन्ट ने चाप युद्ध का खर्च जापानियों को कुछ दिया है और देना स्वीकार कर लिया है किन्तु लोक जार महोदय के विशेष अनुरोध से यह नहीं लिखी गई तथा बहुत लोग इस बात नहीं है।

जापानी पत्र सम्पादकों ने लिखा था, तुलना में यह सन्धि पत्र कुछ चीज नहीं है।

अमेरिका, जरमनी और पेरिस के पत्र सम्पादकों ने एकवाक्य से जापान की महानुभावता और रूसमन्त्रियों की कूट राजनीतिज्ञता की बड़ी भारी प्रशंसा के गीत गाये थे।

रूस पत्र "नवोभ्रिमिया" ने लिखा था, वर्त्तमान सन्धि से हमारी महा हानि हुई है। रूस के "सुमेट" पत्र ने कहा था— सेंगेलिया द्वीप का अर्धांश परित्याग की तुलना में जापानियों का यह त्याग स्वीकार किसी काम का नहीं है। "रास" पत्र में प्रकाश हुआ था—वर्त्तमान सन्धि से शत्रुपक्ष को ही अधिक लाभ हुआ हमारी हानिही हानि है। "नओस्ती" ने लिखा था, इस सधि से रूस का पूर्ण गौरव विनष्ट हो चुका है।

रूस-जापान के युद्ध का संधि पत्र हस्ताक्षरित होने के कुछ पहिले अंग्रेज और जापानियों में (१२ अगस्त १९०५ ई० को) एक मित्रता के वर्त्ताव का साधि पत्र लिखा गया उसमें उभय शक्तियों ने एक दूसरे को अवसर पड़ने पर सहायता करने की प्रतिज्ञा की है। फिर कुछ दिनों बाद रूस-जापान का भी मित्रता सूचक एक संधि पत्र लिखा गया है, जिसमें उक्त साम्राज्यों ने समय पड़ने पर एक दूसरे को सहायता देने का (आपस में) वचन दिया है।

